ओ३म्

परोपकारिणी

पाक्षिक

परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष - ५८ अंक -२

महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र

जनवरी (द्वितीय) २०१६

महर्षि दयानन्द सरस्वती

ऋषि मेले की झलकियाँ

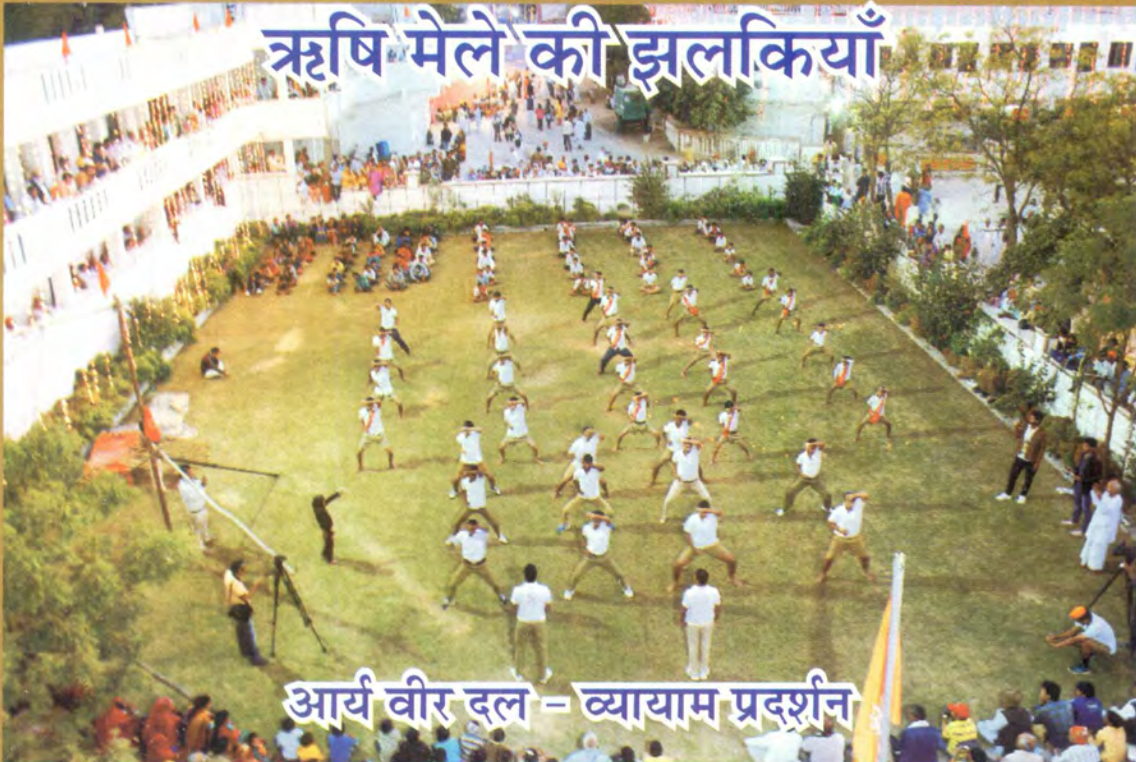

आर्य वीर दल - व्यायाम प्रदर्शन

"वेद-कण्ठस्थीकरण" प्रतियोगिता के विजेता

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५८ अंक : २
दयानन्दाब्द: १९१
विक्रम संवत्: पौष शुक्ल, २०७२
कलि संवत्: ५११६
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११६

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-
भारत में
वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में
वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९/५९

परोपकारी

जनवरी द्वितीय २०१६

अनुक्रम

१. देश में असहिष्णुता बढ़ रही है, क्योंकि...	सम्पादकीय	४
२. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	७
३. पुनरुत्थान युग का द्रष्टा	स्व. डॉ. रघुवंश	१४
४. सृष्टि उत्पत्ति क्यों और कैसे ?....	पं. उदयवीर शास्त्री	१९
५. श्रद्धेय भक्त फूल सिंह के.....	चन्द्राम आर्य	२२
६. वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन		२४
७. पुस्तक समीक्षा	देवमुनि	२६
८. दोस्त हो तो ऐसा	धर्मेन्द्र गौड़	२७
९. अध्यात्मवाद	कृष्णचन्द्र गर्ग	३०
१०. जिज्ञासा समाधान-१०३	आचार्य सोमदेव	३३
११. प्रतिक्रिया		३६
१२. स्तुता मया वरदा वेदमाता-२६		३७
१३. संस्था-समाचार		३८
१४. आर्यजगत् के समाचार		४१

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

देश में असहिष्णुता बढ़ रही है, क्योंकि हमें मोदी सहन नहीं है।

बिहार चुनाव के समय असहिष्णुता पर बड़ी बहस चल रही थी। जिसको देखो, वह इस देश की बढ़ती हुई असहिष्णुता से चिन्तित दिखाई दे रहा था। देश के राष्ट्रपति से लेकर गली के नेता तक प्रतिदिन वक्तव्य दे रहे थे। असहिष्णुता कोई नई घटना है या किसी परिवर्तन का परिणाम! गत दिनों असहिष्णुता पर लेख लिखते हुए एक लेखक ने ऑक्सफोर्ड शब्दकोश के आधार पर असहिष्णुता की परिभाषा को दो भागों में बाँटा था-

(क) किसी ऐसी बात की उपस्थिति या अभिव्यक्ति को (जो कि उसे पसन्द नहीं है या जिससे उसकी सहमति नहीं है) बिना विरोध सहन करने की सामर्थ्य या सहनशीलता।

(ख) किसी अप्रसन्नता वाली वस्तु (दवाई आदि भी) को बिना विपरीत प्रतिक्रिया के सहन करना।

यह परिभाषा एक प्रामाणिक कोष की परिभाषा है, ठीक ही होगी। भारत में सहिष्णुता-असहिष्णुता का मूल्यांकन इस परिभाषा पर नहीं किया जा सकता। भारत में स्वतन्त्रता के बाद से जो हो रहा था, उसकी परिभाषा गाँधी जी की दी हुई थी। उनके विचार से इस देश में दो ही विचारधाराएँ हैं- एक हिन्दू समर्थक, एक हिन्दू विरोधी। भारत की सहिष्णुता केवल हिन्दू-विरोध का दूसरा नाम है। यह हिन्दू विरोध मुस्लिम, ईसाई विरोधी हो जाये तो असहिष्णुता है और हिन्दू अपने ऊपर हो रहे अत्याचार का विरोध करे तो वह भी घोर असहिष्णुता है।

यदि ईसाई चर्च प्रलोभन अथवा भय से हिन्दुओं का धर्मान्तरण कराये तो यह उदारता सहिष्णुता है, यदि हिन्दू इसका विरोध करने लगे तो यह असहिष्णुता है। कहीं किसी ईसाई को हिन्दू बनाने की बात की तो यह असहिष्णुता बढ़ाना है। कश्मीर में कई हजार हिन्दू स्थानों का नाम एक आदेश से बदल देना और किसी के द्वारा विरोध में स्वर न उठाना, यह सहनशीलता है और दिल्ली के औरंगजेब मार्ग का नाम कलाम के नाम पर करना, यह असहिष्णुता है।

कोलकाता में दुर्गा-पूजा पर पण्डाल तोड़ना सहिष्णुता है और मुसलमानों को सड़क पर यातायात अवरुद्ध करने से रोकना असहिष्णुता है। मन्दिर तोड़ना, हिन्दू महिलाओं को निर्वस्त्र कर दौड़ाना सहिष्णुता है, मस्जिद में इकट्ठे होकर देशद्रोह के व्याख्यानों की निन्दा करना असहिष्णुता है। साध्वी प्रज्ञा को आतंकी मान, बिना अपराध जेल में रखना सहिष्णुता है। आतंकी को न्यायालय द्वारा फाँसी दिया जाना असहिष्णुता है। गोधरा में गाड़ी के डिब्बे बन्द करके पैट्रोल डालकर जला डालना सहिष्णुता है। प्रतिक्रिया में हिन्दुओं का आक्रामक होना असहिष्णुता है। संसद के अन्दर वन्दे मातरम् का गान होते समय गान का अपमान करने वाले की प्रशंसा करना सहिष्णुता है और वन्दे मातरम गाने वाले की प्रशंसा करना असहिष्णुता है। आजम खाँ का संघ को आतंकी कहना सहिष्णुता है और तिवाड़ी द्वारा बदले में इस्लाम पर टिप्पणी करना असहिष्णुता है। हिन्दुओं द्वारा आत्मरक्षा में उठाया गया काम असहिष्णुता और अपराध है, मुसलमानों द्वारा नवादा में गाड़ियों को जला देना, थाने पर आक्रमण करके आग लगा देना सहिष्णुता की परिभाषा में आता है। ओड़िशा में एक सन्त को कुल्हाड़ी से काट देना सहिष्णुता है और पादरी को जला देना असहिष्णुता है। मुसलमानों द्वारा गाय-ऊँट को मारने पर रोक लगाना असहिष्णुता है, चौराहे पर गोवध करना सहिष्णुता है।

इतिहास में इससे पहले भी बड़ी-बड़ी घटनायें घटीं, तब भी किसी को असहिष्णुता का बोध नहीं हुआ। इन्दिरा गाँधी ने १९७५ में आपात्काल की घोषणा की, तब साहित्यकारों ने पुरस्कार स्वीकारना भी बन्द नहीं किया, लौटाना तो दूर की बात है। १९८४ में इन्दिरा गाँधी की हत्या की प्रतिक्रिया में तीन हजार से अधिक सिक्खों की हत्या कर दी गई और बदले में सहिष्णु लोगों की प्रतिक्रिया

थी। जब कोई बड़ा पेड़ गिरता है तो धरती हिलती है। इससे पता लगता है कि सहिष्णुता की दिशा क्या है? भागलपुर के दंगे प्रसिद्ध हैं, तब भी असहिष्णुता का कोई अवसर नहीं था। विचारों की स्वतन्त्रता का ढोंग करने वाले वामपन्थी, कांग्रेसी और तथाकथित प्रगतिशील लोग हिन्दू देवी-देवताओं को गाली देना, विचार-स्वतन्त्रता और अभिव्यक्ति का अधिकार मानते हैं। तसलीमा नसरीन के देश निकाले और जान से मार देने के फतवे को सुनकर कबूतर की तरह बिल्ली के आने पर आँखें बन्द कर लेते हैं। विचार-स्वतन्त्रता और अभिव्यक्ति की बात करने वाले ये ही लोग भारत में रुशदी की पुस्तक पर प्रतिबन्ध लगाने की बात करते हैं। रुशदी के भारत में आने पर उसका विरोध करते हैं। जयपुर कार्यक्रम से बाहर जाने के लिये बाध्य करते हैं। केरल में एक ईसाई प्रोफेसर का हाथ इसलिये काट दिया जाता है कि उसने इस्लाम के विरोध में लिखा था, यह भी इस देश की सहिष्णुता का उदाहरण है। इन प्रगतिशील विचारकों की सहिष्णुता प्रशंसनीय है।

एक बार मुझे रेल में जाते हुए सीमा सुरक्षा बल के अधिकारी ने अपने अनुभव बताते हुए कहा था- कश्मीर चुनाव में एक मतदान केन्द्र पर उसकी नियुक्ति थी। वहाँ केवल दो मतदाता थे, वह गाँव कश्मीरी पण्डितों का था। उस अधिकारी ने बताया- गाँव के वृद्ध ने कश्मीरी पण्डितों को भगाने की घटना सुनाते हुये कहा था कि इसी वृक्ष के नीचे छब्बीस कश्मीरी पण्डितों की हत्या की गई थी। जहाँ सैंकड़ों लोगों की हत्या हुई हो और जिस देश में अपने ही घर से बेघर कर बीस वर्षों से भी अधिक समय से शेष लोगों को शरणार्थी बना दिया गया हो- क्या यह हमारी सहिष्णुता का प्रमाण नहीं है? कश्मीर में पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे लगाना सहिष्णुता नहीं है? जब कश्मीर में भारतीय सेना के जवान आतंकियों की छानबीन करते हैं, उन्हें मार गिराते है, तब नि:सन्देह भारत की सहिष्णुता खतरे में होती है। हिन्दू लड़कियों को भगाना, बलात्कार करना, हत्या कर देना, आदि को एक सामान्य बात मानना, इस देश में सहिष्णुता का ही प्रमाण है। कौन इसके विरोध में आवाज उठाता है? कौन अपने पुरस्कार लौटाता है? एक दादरी काण्ड पर सारा देश पुरस्कार लौटाने के लिये पंक्ति में खड़ा हो जाता है। यहाँ आतंकियों का सम्मान करने में होड़ लगती है। चाहे दिल्ली का बटाला हाउस काण्ड हो या गुजरात में इशरतजहाँ का मारा जाना। आतंकियों के घर पुरस्कार के रूप में लाखों रुपये के चेक लेकर सहिष्णु लोग ही तो पहुँचते हैं। ये थोड़े से उदाहरण धार्मिक सहिष्णुता के हैं।

इस देश में दो वर्ग विशेष रूप से असहिष्णुता से पीड़ित हैं- राजनीतिक दृष्टि से कांग्रेस और उसके पिछलग्गू लोग। इनका असहिष्णु होना बनता भी है। कांग्रेस की सत्ता छिन गई और ये लोग सोचते हैं कि देश में सहिष्णुता रहनी चाहिये। जो लोग साठ साल से इस देश पर राज्य कर रहे थे और उन्होंने इसे अपना पैतृक अधिकार समझ रखा था, उनको इस देश की जनता ने पराजित कर सत्ता से बाहर कर दिया तो जनता का इससे बड़ा उनके साथ अन्याय क्या हो सकता है? ऐसे लोगों में आक्रोश होना स्वाभाविक है, वे असहिष्णुता की बात करें तो ठीक ही है, इस देश की जनता ने उनको सहने से इन्कार कर दिया, क्या इस देश की जनता असहिष्णु नहीं हो गई है? केवल सत्ता ही गई हो, ऐसा तो नहीं है। सत्ता के जाने से सम्पत्ति और सम्मान भी तो जाता है। सत्ता से एक महिला इंग्लैण्ड की महारानी से भी अधिक सम्पत्ति उपार्जित कर लेती है, क्या बिना सत्ता के ऐसा सम्भव है? बिना सरकार में हुए सरकार से बड़ा पद मिल जाना, क्या सत्ता के बिना सम्भव है? राजा के घर पैदा होकर राज्य का अधिकार मिलने की सहज परम्परा का टूट जाना, क्या सहन करने योग्य बात है? इसके कारण देश के लोगों में असहिष्णुता बढ़ना सहज बात है। उनकी सरकार के रहते मन्त्री और अधिकारियों और नेताओं ने जो लूट मचा रखी थी, क्या उसके रुक जाने पर कोई शान्ति पाठ कर सकता है? मुझे गत दिनों आर्य समाज शामली के कार्यक्रम में जाने का अवसर मिला। वहाँ के आर्य सज्जन रघुवीर सिंह आर्य जी के साथ छ: दिन रहने का अवसर मिला। उनका लोहे का कारखाना है, गाड़ी के धुरे आदि बनाते हैं। उनके पुत्र ने एक बात बताई कि मोदी जी के आने से उनको व्यापार में घाटा हुआ, परन्तु देश को लाभ। पूछने पर उन्होंने बताया कि मोदी सरकार के आने से भारत का कच्चा लोहा बाहर

जाना बन्द हो गया। लोहे का निर्यात बन्द हुआ तो लोहा भारत के बाजार में सस्ता हो गया। इससे देश के व्यापारी को तो तत्काल हानि हो गई, पर कच्चे लोहे का निर्यात बन्द होने से उपभोक्ता को लोहा सस्ता मिल रहा है और देश में ही लोहे का निर्माण हो रहा है। कांग्रेस राज में खनिज निर्यात करके दलाल लोग अपनी जेबें भर रहे थे और देश को हानि हो रही थी। इसी प्रकार खाद्यान्न आदि में भी हो रहा है। इससे जिन लोगों की बेनामी बेहिसाब सम्पत्ति मिल रही थी, क्या उनमें असहिष्णुता नहीं बढ़ेगी। जिस-जिसके भी स्वार्थ पर चोट पड़ेगी, वह असहिष्णु तो होगा ही। इस देश में कांग्रेस ने कुछ सहिष्णुता के केन्द्र बनाये थे, जिनमें देश के अन्दर सहिष्णुता उत्पन्न की जाती है। उनमें से एक है- जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय। यह विश्वविद्यालय प्रगति और आधुनिकता का जनक है। जब यह विश्वविद्यालय बना तो इसमें सब भाषाओं के विभाग खोले गये, परन्तु संस्कृत भाषा का विभाग नहीं खोला गया, क्योंकि इस देश के लोगों में संस्कृत पढ़ने से असहिष्णुता बढ़ती है। जब मुरली मनोहर जोशी ने इस विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग खोलने की अनुमति दी तो यहाँ पर विरोध, हड़ताल और आन्दोलन किये गये, परन्तु संस्कृत विभाग तो खुल गया, फिर असहिष्णुता तो इस देश में बढ़नी ही है।

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय की सहिष्णुता का एक उदाहरण देना असंगत नहीं होगा। इस विश्वविद्यालय में एक छात्र जितेन्द्र धाकड़ संस्कृत विषय में एम.फिल. का छात्र है। यह परिवार से आर्यसमाजी है। यह प्रतिवर्ष अपना जन्मदिन हवन, यज्ञ करके ही मनाता है। इसने इस वर्ष २१ नवम्बर को विश्वविद्यालय में छात्रावास के अपने कक्ष में मित्रों के साथ यज्ञ का आयोजन किया। फिर क्या था, छात्रावास के कामरेडों ने इसकी शिकायत छात्रावास अधीक्षक से कर दी। छात्रावास अधीक्षक (वार्डन) भी एक ईसाई बर्टेनक्लेट्स है, वह तुरन्त कक्ष संख्या १३० में पहुँचा। उसके साथ कामरेड शिकायत करने वाले भी थे। इन्होंने जबरदस्ती उस छात्र का हवन बन्द करा दिया। छात्रावास मुस्लिम छात्रों को जब नमाज पढ़ने से नहीं रोकता, ईद मनाने से नहीं रोकता, क्रिसमस धूमधाम से मनाया जाता है, बीफ पार्टी का आयोजन करने की अनुमति मिल सकती है। फिर हवन को जबरदस्ती बन्द कराना कौन-सी सहिष्णुता का उदाहरण है- ये असहिष्णुता से पीड़ित लोग बता सकेंगे। देश के प्रधानमन्त्री को अलीगढ़ में न बुलाने देना, यह भी सहिष्णुता का ही उदाहरण है। जिन तथाकथित धर्मनिरपेक्ष हिन्दुओं से इतनी पीड़ा है कि उन्हें अपने देश में अपनी परम्परा का निर्वाह करने में विरोध सहना पड़ रहा है, वे मुस्लिम देशों की सहिष्णुता से कुछ क्यों नहीं सीखते? पिछले दिनों २२ दिसम्बर को ब्रुनेई के सुल्तान ने क्रिसमस का पर्व मनाने पर बड़ी सजा देने की घोषणा की तथा ऐसा करने वालों को पाँच साल की जेल या बीस हजार डॉलर का दण्ड देना होगा। यदि कोई घर में अकेले मनाना चाहता है तो उसे प्रशासन से अनुमति लेनी होगी। २४ दिसम्बर को अफ्रीकी देश सोमालिया के मन्त्री शेख मोहम्मद खेचरो ने अपने देश के लोगों को आदेश दिया कि क्रिसमस और नववर्ष न मनाया जाय, यह ईसाइयों का पर्व है, इससे मुसलमानों का कोई सम्बन्ध नहीं। गुप्तचर विभाग को निगरानी करने के लिये कहा है।

इन घटनाओं के चलते भारत में असहिष्णुता दीखती है तो वह चाहे धार्मिक हो, जातीय हो या राजनैतिक, मूल कारण है मोदी का प्रधानमन्त्री बनना और हिन्दुओं का अन्याय के विरुद्ध मुखर होना। जो लोग कहते हैं कि मोदी से पहले देश में शान्ति और भाईचारा था, यहाँ गंगा जमुनी संस्कृति है- यह झूठ और आत्म प्रवञ्चना है। इस देश में अल्पसंख्यकों और सरकार द्वारा हिन्दुओं पर जितने अत्याचार हुए हैं, उनकी कोई गिनती नहीं, फिर भी यह देश सहिष्णु था तो इसका असहिष्णु होना ही ठीक है। अच्छा होता, यह देश एक हजार वर्ष पूर्व असहिष्णु हो जाता तो दास न बना होता। नीतिकार ने कहा है- जन्मान्ध नहीं देखता, कामान्ध नहीं देखता, उन्मत्त-पागल नहीं देखता और स्वार्थी भी नहीं देखता। इन अन्धों की सहिष्णुता पर क्या कहा जा सकता है-

नैव पश्यति जन्मान्धो कामान्धो नैव पश्यति।
मदोन्मत्ता न पश्यन्ति ह्यर्थो दोषं न पश्यति।।

- धर्मवीर

कुछ तड़प-कुछ झड़प

– राजेन्द्र जिज्ञासु

आवागमन पर पं. लेखराम जी के अनूठे तर्क:- अमरोहा से प्रकाशित होने वाले साप्ताहिक आर्य सामाजिक -पत्र का एक अंक नजीबाबाद गुरुकुल में एक आर्य बन्धु ने दिखाया। उसमें पुनर्जन्म पर एक लेख का शीर्षक पढ़कर ऐसा लगा कि मेरे किसी प्रेमी ने मेरे पुनर्जन्म विषयक (परोपकारी में छपे) तर्कों पर कुछ प्रश्न उठाये होंगे, परन्तु बात इससे उलटी ही निकली। विचारशील लेखक ने परोपकारी में दिये गये मेरे विचारों व तर्कों को उजागर (High light) करते हुए जोरदार लेख दिया। उस आर्य भाई को व सम्पादक जी को धन्यवाद!

उस लेख को पढ़ने से पूर्व ही मेरे मन में 'तड़प-झड़प' में पं. लेखराम जी का पुनर्जन्म विषयक मौलिक चिन्तन व प्रबल युक्तियाँ देने का निश्चय था। हमारे मान्य आचार्य सत्यजित् जी तथा आदरणीय आचार्य सोमदेव जी पाठकों का शंका-समाधान करते हुए बड़े सुन्दर प्रमाण व तर्क देते रहते हैं। उनका परिश्रम वन्दनीय है। उनसे भी विनती की है कि हमें अपने पुराने दार्शनिक विद्वानों यथा- पं. लेखराम जी, पं. गुरुदत्त जी, पूज्य दर्शनानन्द जी, श्रद्धेय देहलवी जी के तर्क उनका नामोल्लेख करके देने चाहिये।

पं. लेखराम जी का पुनर्जन्म विषयक ग्रन्थ पढ़कर अनेक सुपठित हिन्दू युवक, जो ईसाइयों, मुसलमानों व ब्राह्म समाजियों के घातक प्रचार से भ्रमित तथा धर्मच्युत हो रहे थे, निष्ठावान् आर्य बन गये। किस-किसका नाम यहाँ दूँ? डी.ए.वी. के पूर्व प्राचार्य बख्शी रामरत्न, महात्मा विष्णुदास जी लताला वाले (स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी को आर्य बनाने वाले) ला. देवीचन्द जी एम. ए. इत्यादि सब पं. लेखराम जी को पढ़-सुनकर आर्य समाज से जुड़े।

१. पं. लेखराम जी का तर्क है कि पुराने भवन ढहते जाते हैं, नये-नये भवनों का निर्माण होता रहता है। सब नये-नये भवन इसी धरती पर विद्यमान पहले के ईंट, पत्थर, मिट्टी व गारे से ही बनाये जाते हैं। नई सामग्री कहीं से नहीं आती।

२. सब नदियाँ जो बह रही हैं, उनका जल कहाँ से आता है? सब जानते हैं, यह वही जल है, जो पहले सागर में गया था। वर्षा का जल, नदियों का जल कहीं परलोक से, अभाव से तो आता नहीं।

३. जितने पेड़, पौधे, वृक्ष उग रहे हैं, फल-फूल रहे हैं, ये सब धरती पर विद्यमान पहले की सामग्री से ही उपजते व फूलते-फलते हैं। अभाव से भाव यहाँ भी नहीं होता और न ही परलोक से इनके बीज आदि आते हैं।

४. सब प्राणियों के शरीर धरती पर विद्यमान सामग्री से (अन्न, जल आदि) से निर्मित व विकसित होते हैं। कहीं से नई-नई सामग्री नहीं आती। जब लाखों-करोड़ों शरीर उसी सामग्री से बनते हैं, जिससे पहले के शरीर बनते रहे हैं, इससे स्पष्ट है कि इस धरा पर नये-नये जीव भी उत्पन्न नहीं होते। जीवात्मायें भी वही हैं, जो इससे पूर्व किसी शरीर का परित्याग कर चुकी हैं। जैसे प्रकृति अनादि है, नई पैदा नहीं होती है, इसी प्रकार परमात्मा नये-नये जीव गढ़-गढ़ कर इस धरती पर नहीं भेजता। जैसे प्रकृति नई-नई नहीं पैदा होती, वैसे ही जीवात्मा भी वही-वही आते-जाते रहते हैं।

स्वामी दर्शनानन्द जी का साहित्य:- कुछ दिन पूर्व इन पंक्तियों के लेखक ने आर्य प्रकाशक श्री अजय जी से स्वामी दर्शनानन्द जी के साहित्य के विषय में कुछ चर्चा की। उन्हें एक सुझाव दिया। उन्होंने मेरे सुझाव को बड़े ध्यान से सुना और धर्मभाव से समझा। हम अपनी मान-प्रतिष्ठा की लालसा में आज पूर्वजों का अवमूल्यन कर रहे हैं। हम यह भूल गये हैं कि सागर पार वैदिक विचारधारा की छाप लगाने वाले पं. गुरुदत्त जी थे। पं. गुरुदत्त जी का सन्देश सब महाद्वीपों में उन्हीं के शिष्य मेहता जैमिनि भूमण्डल प्रचारक ने सुनाया। आरम्भिक काल के अधिकांश उपदेशक व शास्त्रार्थ महारथी उपदेश विद्यालयों की उपज नहीं थे। हकीम सन्तराम, स्वामी योगेन्द्रपाल और पूज्य पं. भोजदत्त जी, पं. लेखराम जी और स्वामी दर्शनानन्द जी का साहित्य पढ़कर सफल और यशस्वी धर्मोपदेशक बने। पूज्य पं. गंगाप्रसाद जी उपाध्याय भी स्वामी दर्शनानन्द जी

के एक ऐसे ही शिष्य थे।

पं. लेखराम जी की कुल्लियात के बढ़िया सम्पादन का कार्य मुझे सौंपा गया है। मैं श्रद्धाभक्ति से पूरी शक्ति से अपना कर्त्तव्य निभाऊँगा। पं. गुरुदत्त जी के चिन्तन पर कोई पुरुषार्थी युवक डॉ. रामप्रकाश जी के मार्गदर्शन में एक लोकोपयोगी पुस्तक तैयार करे, तो बहुत पुण्य का कार्य होगा। मैं भी सहयोग करूँगा।

स्वामी दर्शनानन्द ग्रन्थ संग्रह:- नजीबाबाद गुरुकुल में विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द द्वारा स्वामी दर्शनानन्द जी के ग्रन्थ-संग्रह का पुनर्मुद्रित संस्करण देखा। इसे स्वामी जगदीश्वरानन्द जी ने तैयार किया था। वे बहुत परिश्रमी थे। आपने इसको तैयार करते हुए उनके ट्रैक्टों के मूल उर्दू संस्करण मुझसे लिये। छपने पर कहा, अभी मेरे पास ही रहने दो............। स्वामी जी की धुन थी। कार्य तो हो गया। छपने पर उसके दोष भी सामने आये। कारण? स्वामी जी को उर्दू का स्वल्प ज्ञान था। स्वामी दर्शनानन्द जी की उर्दू हर कोई नहीं समझ सकता। हर कोई, हर कार्य नहीं कर सकता। श्रीयुत नन्दकिशोर जी ने मुझे महाविद्यालय से बहुत पहले छपा दर्शनानन्द ग्रन्थ-संग्रह दिखाया। मेरे सामने इस समय स्वामी जी के 'आर्य सिद्धान्त' मासिक की एक फाईल है।

इसमें भी उनके लगभग एक दर्जन ट्रैक्ट क्रमश: छपे हैं। स्वामी जी के जीते-जी इनका हिन्दी अनुवाद हो गया था। स्वामी जगदीश्वरानन्द जी ने अपनी समझ से यूँ ही कहीं-कहीं काँट-छाँट करके गड़बड़ कर दी। मैंने श्री अजय जी के कहने पर कुछ तो सुधार कर दिया, परन्तु नाम मात्र ही। स्वामी दर्शनानन्द जी के उपनिषद् प्रकाश का जो अनुवाद स्वामी वेदानन्द जी ने किया, वह अत्युत्तम था।

स्वामी जगदीश्वरानन्द जी ने तो 'ख़िजर' का अर्थ पाद-टिप्पणी में फरिश्ता लिख डाला, यह ठीक नहीं। वह पैगम्बर माना जाता है। मैंने इसे ठीक तो किया है। स्वामी जी ने पूर्व के किसी अनुवाद को अपने प्राक्कथन में 'महाभ्रष्ट' लिखा है। वह कौन-सा अनुवाद था? यह बताया नहीं। उनका अपना संस्करण ही प्रश्नों के घेरे में है। एक बड़े विद्वान् ने कई प्रश्न उठाये थे। मेरी इच्छा है कि श्री अजय जी इसका अगला संस्करण प्रकाशित करने से पूर्व अच्छी प्रकार से जाँच-पड़ताल व मिलान कर लें। मैंने अधिकांश मूल उर्दू ट्रैक्ट परोपकारिणी सभा को सौंप दिये हैं।

आलाराम स्वामी की पीड़ा:- स्वामी आलाराम नाम के एक बाबा जी ने उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम वर्षों में आर्य समाज में प्रवेश किया। वे किस प्रयोजन से आर्य समाज में आये- यह जानने का किसी ने तब यत्न नहीं किया। बाबा ने घूम-घूम कर आर्य समाज का अच्छा प्रचार किया। बोलने की कला में उन्हें सिद्धि प्राप्त थी, पर कुछ ही वर्षों में आर्य समाज के घोर विरोधी के रूप में सनातन धर्म के बहुत बड़े नेता व विचारक बन गये। ऋषि दयानन्द और आर्य समाज को कोसने से लीडर बनना व धन कमाना बड़ा अचूक नुस्खा आपके भी काम आया।

आप ही ने प्रयाग में सत्यार्थप्रकाश पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए एक प्रसिद्ध केस करके अपनी राजभक्ति की धूम मचा दी। सत्यार्थप्रकाश राजद्रोह फैलाने वाला ग्रन्थ है, इसलिए आप इसे जब्त करने पर तुल गये, परन्तु हाथ कुछ भी न लगा।

आर्य समाज में रहते हुए एक बार मेरे जन्म स्थान के समीप जफरवाल कस्बा में बाबा आलाराम ने आर्य समाज के प्रचार की धूम मचा दी। वे हास्यरस में बोलते हुए एक लावणी बहुत सुनाया करते थे:- 'धौल दाहढ़े मरें पुत्र आरज बन जायेंगे।' अर्थात् श्वेत दाढ़ी वाले वृद्धों के मर जाने पर इनके पुत्र आर्य बन जायेंगे। पौराणिक दल के नेता बनकर बाबाजी ने 'दयानन्द मिथ्यात्व प्रकाश' की एक पुस्तकमाला निकाली। इसके पाँच-छह भाग मेरे पुस्तकालय में हैं। यह पुस्तकमाला धर्म प्रचार के प्रयोजन से तो लिखी नहीं गई थी। इसका मुख्य प्रयोजन लोगों को राजभक्ति की घुट्टी पिलाना था। यह पुस्तकमाला के मुखपृष्ठ पर छपा करता था।

मैंने माननीय आचार्य सोमदेव जी से प्रार्थना की है कि वे बाबा आलाराम सागर की इस पुस्तकमाला पर एक ३२ पृष्ठ की प्रामाणिक पुस्तक लिख दें। इससे महर्षि के व्यक्तित्व, उपकार, सुधार तथा वैदिक धर्म की विशेषताओं का नई पीढ़ी को ठोस ज्ञान होगा। 'सत्यार्थप्रकाश' का भयभूत विरोधियों पर ऐसा सवार हुआ कि बाबा आलाराम

को अपनी पुस्तकमाला में 'प्रकाश' शब्द जोड़ना पड़ा। मौलवी सनाउल्ला को अपनी पुस्तक का नाम 'हक प्रकाश' रखना पड़ा। यह सत्यार्थप्रकाश का चमत्कार ही तो था।

आर्य समाज के वह निर्भीक निर्माता:- इतिहास लेखक कोई भी हो, उससे कोई-न-कोई महत्त्वपूर्ण घटना छूट जाती है। उसके पीछे आने वाले इतिहास गवेषकों का यह कर्त्तव्य बनता है कि वे ऐसी छूट गई महत्त्वपूर्ण सामग्री को प्रकाश में लायें। आर्य समाज में भी ऐसे कई गुणी, ज्ञानी, इतिहास प्रेमी हुए हैं, जिन्होंने समय-समय पर इतिहास के लुप्त गुप्त स्वर्णिम पृष्ठों का अनावरण करके अच्छा यश पाया, परन्तु आर्य समाज में इतिहास की स्वर्णिम, प्रेरक, गौरवपूर्ण सामग्री को छिपाने, लुकाने व हटाने (हटावट) का भी सुनियोजित प्रयास हुआ है। लोग मिलावट पर तो अश्रुपात करते हैं, स्वामी वेदानन्द जी महाराज को हमने मिलावट, बनावट के साथ हटावट पर भी अश्रुपात करते देखा था।

लाला लाजपतराय से हमारा कोई सम्बन्ध नहीं, यह आश्वासन देने एक टोली पंजाब के गवर्नर को कालका में मिली। महात्मा हंसराज जी इस शिष्ट मण्डल के मुखिया थे। बहुत लोग इसे जानते थे, परन्तु इस पर परदा डाला गया। वैद्य गुरुदत्त जी ने पर्दा उठाया तो एतद्विषयक नई-नई जानकारी हमें मिलती गई। स्वामी दर्शनानन्द राजनीति से कोसों दूर थे। हमें इसी सम्बन्ध में उनकी निडरता का प्रमाण हाथ लगा। जब लाला जी के सब साथी उन्हें छोड़ गये, तो आपने निर्भय होकर अपने साप्ताहिक 'महाविद्यालय समाचार' में श्री महाशय कृष्ण जी का संक्षिप्त लेख 'ख़िताब और इताब' अर्थात् सम्मान व यातना छापकर लाला लाजपतराय के निष्कासन के समय उनको महिमा मण्डित करके अपनी प्रखर देशभक्ति व आर्यत्व का परिचय दिया। यह अंक हमारे पास है।

अभी लालाजी और आर्यसमाज सरकार के निशाने पर ही थे, दमन व दलन का चक्कर चल ही रहा था कि स्वामी दर्शनानन्द जी ने अपने 'आर्य सिद्धान्त' मासिक में लालाजी को खुलकर ''पंजाब केसरी लोकमान्य लाला लाजपतराय'' लिखकर उनके द्वारा दीन-दरिद्र, अनाथ-असहायजनों की सेवा व रक्षा के कार्यों की खुलकर भूरि-भूरि प्रशंसा की। हमने भी आर्य समाज के सात खण्डों के इतिहास पर बहुत थोड़ी, फिर भी एक विहंगम दृष्टि तो डाली, परन्तु हमें यह प्रसंग कहीं दिखाई न दिया और न ही मैक्समूलर रौमाँ-रोलाँ तथा जवाहरलाल नेहरू की इतिहासज्ञता की माला फेरने वालों से महान साधु दर्शनानन्द की इस रूप की कुछ चर्चा सुनने को मिली। उलटा प्रतापसिंह की राजभक्ति के किस्से सुनाने लगे। जातियों, संस्थाओं व जन साधारण को उबारने में समय लगता है। रात-रात में ठाकुर रोशनसिंह व पं. नरेन्द्र का निर्माण नहीं हो सकता। भावना तो आर्यों की आरम्भ से ही यही रही। यही आर्य समाज की तान थी -

दयानन्द देश हितकारी। तेरी हिम्मत पै बलिहारी।।

बुद्धिमानों के लिए संकेत ही पर्याप्त है।

उत्तर प्रदेश के आर्यों का शौर्य:- लाला लाजपतराय जी के निष्कासन के समय महात्मा मुंशीराम जब मैदान में उतर कर दहाड़ने लगे, तब पंजाब का सारा महात्मा दल लोहे की दीवार बनकर महात्मा जी के पीछे खड़ा था- ऐसा प्रसिद्ध क्रान्तिकारी आनन्दकिशोर जी मेहता ने अपनी पुस्तक में लिखा है। मेहता आनन्दकिशोर जी भी तब सताये जा रहे राष्ट्रभक्तों में से एक थे। मैंने इस इतिहास पर लिखते हुए उस समय के उत्तरप्रदेश के एक आर्यसमाजी को भी लाला जी के पक्ष में महात्मा मुंशीराम की आवाज में आवाज मिलाते दिखाया था।

एक लम्बे समय तक मैं ऐसे लेखों व प्रमाणों की खोज में रहा जिससे यह सिद्ध हो कि तब आर्य समाज के संन्यासी, विद्वान्, भजनोपदेशक, गृहस्थी, आबालवृद्ध सब महात्मा मुंशीराम जी के पीछे खड़े थे। बड़े लम्बे समय की प्रतीक्षा करने के पश्चात् एक ऐसा लम्बा लेख मिला है। प्रिय राहुल जी ने **'आर्य समाचार'** मासिक का उस युग का एक सम्पादकीय मुझे उपलब्ध करवा दिया है। इस लम्बे लेख की रंगत वही है, जो उन दिनों पूज्य महात्मा मुंशीराम जी के लेखों व व्याख्यानों की होती थी। मैंने इस फाईल की खोज में मेरठ, मुरादाबाद, प्रयाग व आगरा आदि कई नगरों की बार-बार यात्रायें कीं। पं. लेखराम वैदिक मिशन के सब आर्यवीरों का परोपकारिणी सभा, परोपकारी परिवार व सम्पूर्ण आर्य जगत् की ओर इस

अविस्मरणीय सेवा के लिए कोटिशः धन्यवाद!

इस करणीय कार्य के लिए धन्यवादः- सन् १९५४ के फरवरी-मार्च मास में पूज्य पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय पंजाब के मोगा, जालंधर तथा लेखरामनगर (कादियाँ) पधारे थे। उस यात्रा में पूज्य उपाध्याय जी ने अपना बहुत-सा साहित्य प्रिं. रामचन्द्र जी जावेद को भेंट करते हुए कहा कि मेरे साहित्य पर विद्वानों के प्रशंसा-पत्र तो बहुत प्राप्त होते रहते हैं। आप मेरे साहित्य की न्यूनतायें दोष मुझे लिखकर भेजें। यह उपाध्याय जी का बड़प्पन था। उनसे सीख लेकर मैंने भी श्री धर्मेन्द्र जी जिज्ञासु तथा अनिल आर्य से अपने साहित्य के गुण, दोष (मुद्रण दोष) भी सब एकत्र करके बताने का भार सौंपा है। वे तो यह कार्य जब करेंगे सो करेंगे। एक कृपालु स्वयं स्फूर्ति से इस कार्य में संलग्न हैं। सूचना मिली है कि आपने चाँदापुर के शास्त्रार्थ विषयक मेरे लेख का एक दोष खोजने का भारी उपकार किया है।

मैंने लिखा है कि मुसलमानों ने ऋषि से कहा कि हम और आप अर्थात् मुसलमान व हिन्दू मिलकर ईसाइयों के मत का खण्डन करें। ऋषि ने कहा- हम यहाँ सत्यासत्य का निर्णय करें, हार-जीत का, स्वदेशी-विदेशी का प्रश्न नहीं। इस पर हमारे प्रेमी का प्रश्न है कि देवेन्द्र बाबू के ग्रन्थ में कुछ लोगों द्वारा यह बात कहने का उल्लेख है। मुसलमानों ने ऐसा कहा, मेरा यह विचार ठीक नहीं। किसी भी पाठक का अपना स्वतन्त्र विचार हो सकता है, परन्तु आलोचक महोदय को पता होना चाहिये कि देवेन्द्र बाबू ने जो कुछ लिखा है, वह पं. लेखराम जी के आधार पर ही लिखा है। **'कुछ लोग मिले'** इससे पहले क्या लिखा है? यह भी पढ़ें। वहाँ मौलवियों व पादरियों का आना लिखा है। पादरी तो यह बात क्या कहेंगे? मौलवी लोगों ने ही ऐसा कहा- यह स्पष्ट है।

मैंने सन् १९४८ में शास्त्रार्थ करने वाले मास्टर प्रतापसिंह जी के मुख से पहली बार ऐसा सुना। आचार्य श्री उदयवीर जी, ठाकुर अमर सिंह, कुँवर सुखलाल जी के परिवार आर्य समाज स्थापना के बहुत पहले ऋषि के भक्त बन गये थे। ठाकुर जी उ.प्र. के निवासी थे। आपने चाँदापुर शास्त्रार्थ के कई प्रत्यक्षदर्शियों से भेंट करके उस समय का वृत्तान्त जाना। मेरे इन तीनों से कैसे सम्बन्ध थे, यह यहाँ क्या लिखूँ? अमर स्वामी जी यही बताया करते थे। हिन्दुओं का तो अस्तित्व ही संकट में था, वे तो रक्षा के लिए ऋषि को बुलाकर लाये। राधास्वामी मत के गुरु हजूर जी का वृत्तान्त मेरे विचार की पुष्टि करता है। वह भी ऋषि के काल के थे। चलो! आपको काम मिल गया। मेरा काम बन जायेगा। आप मेरे सारे साहित्य के जो-जो दोष आपको दिखाई दें- वे सब निकालें। यह भी एक उपकार का काम होगा। आपको पुण्य की प्राप्ति होगी। इससे बहुतों का भला होगा। हिन्दुओं को मुसलमान व ईसाई बनने से बचाने के लिए ही कबीर पंथियों ने ऋषि जी को बुलवाया था। वे ऐसा सुझाव नहीं दे सकते थे। कबीर पंथी विचारक की पुस्तक मेरे पास है। आक्षेपक महोदय को मेरा दोष दर्शाना था। कुछ और पढ़ लेते तो भला होता।

बिहार के चुनाव से राजनेता सीख लेंः- बिहार चुनाव पर राजनीति-विशारद अपनी-अपनी टिप्पणियाँ कर रहे हैं। हम राजनीति से दूर हैं। दर्शक मात्र हैं। भाजपा की पराजय के जो कारण विश्लेषक बता रहे हैं, वे यथार्थ हैं। बिहार चुनाव में राजनेताओं के भाषण बहुत निम्न स्तर पर पहुँच गये। मानो किसी की भी वाणी पर कोई अंकुश नहीं था। राष्ट्रीय चरित्र की सिखलाई व दुहाई देने वालों की वाणी ही भाजपा की पराजय का एक मुख्य कारण रही। द्वैत शासन से भाजपा मुक्त होगी तो सफलता मिलेगी। संघ का मुखौटा बनकर जनता से न्याय नहीं हो सकता। श्री भागवत ने चुनाव के बीच में वक्तव्य देकर भाजपा की पराजय निश्चित कर दी। भाजपा के नेता व प्रवक्ता (जो संघ के प्रचारक रहे) श्री भागवत को कुछ भी कहने का साहस न कर सके। गिरिराज जी जैसे तिलकधारी खुलकर खेले। वाणी की मृदुलता व सरलता से जनता का हृदय ऐसे लोग नहीं जीत सकते। हिन्दुओं की चिन्ता तो इन्हें है, पर हिन्दुओं का भला कब किया? जातिवाद व अंधविश्वासों में फँसे ये लोग.....। **-वेद सदन, अबोहर-१५२११६**

सब व्यवहार करने वालों को चाहिये कि जो मनुष्य जिस काम में चतुर हो उसको उसी काम में प्रवृत्त करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२०

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग—साधना शिविर

दिनांक : १२ से १९ जून, २०१६

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान-विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग-साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक-दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।

२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।

३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य-सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।

४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।

५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि-उद्यान परिसर में ही की जायेगी।

६. बाह्य-वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार-पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।

७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।

९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय-कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।

१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन-सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।

११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ-मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है।

ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

-संयोजक

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें।

-संपादक

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन निःशुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

जैसे मेघ वर्षा समय में अपने जल के समूह से सब पदार्थों को तृप्त करता हुआ उन्नति देता है वैसे ईश्वर भी योगाभ्यास करने वाले योगी पुरुष के योग को अत्यन्त बढ़ाता है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.४०

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

पुनरुत्थान युग का द्रष्टा

- स्व. डॉ. रघुवंश

कीर्तिशेष डॉ. रघुवंश हिन्दी-जगत् के जाने-माने विद्वान् थे। वे हिन्दी-संस्कृत-अंग्रेजी के परिपक्व ज्ञाता तो थे ही, भारत की शास्त्रीयता और उसके इतिहास के अनुशीलन में भी उनकी विपुल रुचि और गति थी। उन्होंने साहित्य के विभिन्न पक्षों पर साहित्य-सर्जन कर अपनी मौलिक प्रतिभा का परिचय दिया। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के अध्यक्ष और समर्थ लेखक के रूप में वे सर्वमान्य रहे। अपने अग्रज श्रीमान् यदुवंश सहाय द्वारा रचित 'महर्षि दयानन्द' नामक ग्रन्थ की भूमिका-रूप में लिखे गए उनके इस लेख से हमारे ऋषिभक्त पाठक लाभान्वित हों, अतः इसे हम उक्त ग्रन्थ से साभार उद्धृत कर रहे हैं। - **सम्पादक**

भारतीय पुनरुत्थान का आधुनिक युग उन्नीसवीं शती के दूसरे चरण से शुरू हुआ। इस युग का सही चित्र प्रस्तुत करते समय इस तथ्य को ठीक परिप्रेक्ष्य में सदा रखना होगा कि इस युग के मानस में पश्चिम का गहरा प्रभाव-संघात रहा है और पश्चिमी संस्कृति का सजग प्रयत्न रहा है कि यह मानस उससे अभिभूत रहे। पश्चिमी आधुनिक संस्कृति अन्य समस्त संस्कृतियों से इस माने में भिन्न है कि वह जागरूक और आत्मालोचन करने में समर्थ है। उसके इतिहास-बोध ने उसे अपने विस्तार, आरोप और संरक्षण का अधिक सामर्थ्य दिया है। उसकी वैज्ञानिक प्रगति ने अपनी शक्ति-विस्तार की उसे अपूर्व क्षमता प्रदान की है। अनेक मानवीय शास्त्रों के वैज्ञानिक विकास में उसने अपना प्रभाव-क्षेत्र अनेक स्तरों और आयामों में फैला लिया है। इसका परिणाम यह हुआ कि पश्चिमी संस्कृति से पिछली पुरानी संस्कृति और परम्परा वाले एशिया के राष्ट्रों और आदि (मैं आदिम कहना अनुचित मानता हूँ) संस्कृति वाले अफ्रीकी और अमरीकी समाजों और देशों को राजनीतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक प्रभावों में अपने उपनिवेश बने रहने के लिए विवश कर दिया है।

पुनरुत्थान युग से शुरू होकर स्वाधीनता प्राप्त होने के बाद तक के भारतीय मानस पर इसका प्रभाव देखा जा सकता है। यहाँ इस समस्या का विस्तृत विवेचन-विश्लेषण करने के बजाय केवल ऐसे कुछ तथ्यों की ओर ध्यान आकर्षित किया जा सकता है। **भारतीय बौद्धिक वर्ग का बहुत बड़ा हिस्सा यह मानता है** कि भारत, वस्तुतः समस्त एशियाई देशों का आधुनिकीकरण तभी संभव हो सका है, जब यूरोप के देशों ने वहाँ उपनिवेश बनाये और वहाँ के निवासियों को पश्चिमी ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा का अवसर प्रदान किया। **भारत की राष्ट्रीय इकाई की परिकल्पना अंग्रेजी राज्य की देन है।** भारतीय संस्कृति, वस्तुतः समस्त एशियाई संस्कृतियाँ पिछड़ी हुई, मध्ययुगीन, प्रगति की सम्भावनाओं से शून्य, अन्धविश्वास और जड़ताओं से ग्रस्त हैं। इनके उद्धार का एक मात्र उपाय है कि ये पश्चिमी संस्कृति को अपना लें। और सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि पश्चिमी संस्कृति संसार की समस्त संस्कृतियों में श्रेष्ठ है, अन्य संस्कृतियाँ अपनी कमियों और कमजोरियों के कारण ह्रासोन्मुखी हुई और अन्ततः विनष्ट हो गई हैं, लेकिन पश्चिम की आधुनिक संस्कृति सबसे श्रेष्ठ और निरन्तर विकासशील है। इस प्रकार के चिन्तन को अग्रसर करने का पश्चिम के समस्त बौद्धिक वर्ग ने और उनके तथा कथित वैज्ञानिक तथा तटस्थ अध्ययनों ने निरन्तर प्रयत्न किया है। **ऐसे पश्चिमी विद्वान् अपवाद ही माने जायँगे, जिन्होंने पश्चिमी संस्कृति की इस श्रेष्ठता और अन्य संस्कृतियों की हीनता के विचार को चुनौती दी हो।** और मजे की बात है कि मानसिक रूप से पश्चिम के गुलाम भारत के बौद्धिक उनके विचारों को प्रामाणिकता तो नहीं देते, पर उनके आधार पर पश्चिमी संस्कृति की महनीयता का समर्थन अवश्य करते हैं।

भारत में अंग्रेजों के प्रभुत्व काल में प्रारम्भ से यह प्रयत्न रहा है कि राजसत्ता के क्रमशः बढ़ते हुए विस्तार के साथ इस देश के परम्परित सामाजिक, प्रशासनिक और आर्थिक ढाँचे को छिन्न-भिन्न कर दिया जाय। इस प्रकार अंग्रेजी राजनीति और राजनय का सारा दृष्टिकोण यह रहा है कि यहाँ की पिछली संस्थाओं, व्यवस्थाओं और परम्पराओं

को नष्ट कर देश की समस्त आन्तरिक शक्ति, आस्था तथा विश्वास को तोड़कर उसे नैतिक मेरुदण्ड-विहीन बना दिया जाय। भारतीय जन-समाज को उसके स्वीकृत आधार से उन्मूलित कर, ग्राम-समाज और पंचायतों के ढाँचों को विशृंखल कर, धार्मिक आस्थाओं को खण्डित कर तथा उद्योग-धन्धों और व्यापार को विनष्ट कर अंग्रेजी भाषा के माध्यम से ज्ञान-विज्ञान की दीक्षा देकर भारतीय मानस को यूरोपीय संस्कृति की महत्ता से इस प्रकार अभिभूत कर दिया कि अधिकांश शिक्षित वर्ग अपने देश के धर्म, समाज और संस्कृति के प्रति हीन भावना से भर गया। इसका सबसे घातक परिणाम यह हुआ कि पुनरुत्थान युग के प्रारम्भ से उन्नति और विकसित होने के लिए पश्चिमीकरण पर बल दिया जाने लगा। यह पश्चिमीकरण अधिकांशत: अनुकरणमूलक ही रहा। कोई भी आरोप अनुकरणमूलक ही हो सकता है।

यह अवश्य हुआ कि अंग्रेजी राजनीति के परिणामस्वरूप भारत में उनके उपनिवेश की जड़ें काफी गहरी और मजबूत रहीं और इस प्रक्रिया में अर्थात् पश्चिमीकरण के दौरान भारत मध्ययुगीन संस्कारों तथा मनोवृत्तियों से अपने को मुक्त कर आधुनिक बन सका। यह बात संस्कारगत और परिवेशगत पक्षपात के कारण मार्क्स तथा ट्वायनवी जैसे यूरोपीय विचारकों ने भी कही है, अन्यों की तो बात अलग है। पश्चिम के मानस-पुत्र भारतीय तो यह राग अलापते कभी थकते नहीं। **बुद्धदेव जैसे सुपुत्र** तो कृतज्ञ भाव से यह मानकर अपना सन्तोष प्रकट करते हैं कि यह तो स्वाभाविक है,क्योंकि हम भारतीय यूरोप के ही आगत प्रवासी हैं। निश्चय ही यह हीन-भाव की उपज है। इस प्रसंग का अधिक विवेचन यहाँ नहीं करना चाहूँगा, क्योंकि अन्यत्र किया गया है, पर सिद्धान्त रूप में कहा जा सकता है कि गुलामी की हीन-भावना से कोई व्यक्ति या राष्ट्र अपने निजी व्यक्तित्व के विकास की दिशा नहीं पा सकता है, क्योंकि व्यक्तित्व की स्वाधीनता तथा निजता का अनुभव विकास की पहली शर्त है। इसी प्रकार कोई भी प्राचीन संस्कृत समाज अपनी जड़ता और अवरुद्धता में भी अपने निजी व्यक्तित्व की खोज बिना किये आगे बढ़ने में समर्थ नहीं हो सकता। अन्तत: यह भी सही है कि अनुकरण किसी भी व्यक्ति या राष्ट्र को न गौरव प्रदान कर सकता है और न मौलिक सर्जनशीलता का मार्ग ही प्रशस्त कर सकता है, जिसके बिना किसी प्रकार की प्रगति संभव नहीं है। साथ ही दृष्टान्त रूप में जापान का उल्लेख करके कहा जा सकता है कि एशिया के सर्वाधिक उन्नत राष्ट्र जापान को न किसी यूरोपीय शक्ति के उपनिवेश होने का सौभाग्य मिला और न किसी विदेशी भाषा के सहारे वहाँ ज्ञान-विज्ञान फैलाने का सुयोग हुआ।

पश्चिमी संस्कृति के रंग में रँगे हुए बौद्धिकों ने एक मिथ रचा है कि भारतीय जागरण अंग्रेजी भाषा और शिक्षा के प्रचार-प्रसार से ही संभव हुआ। पुनरुत्थान का नेतृत्व अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त महापुरुषों ने ही किया है। इस मिथ में तथ्यात्मक आधार जरूर है, पर यह सत्य नहीं है। यह संयोग था और इस संयोग के पीछे पश्चिमी उपनिवेशवाद की सारी विभीषिका थी, कि पश्चिम के सम्पर्क में भारत अंग्रेजों और अंग्रेजी के माध्यम से आया तथा यह भी संयोग इसी से संभव हुआ कि भारत के **इस नये पुनरुत्थान युग के नेता स्वामी दयानन्द को छोड़कर अंग्रेजी भाषा के माध्यम से पश्चिम, विशेषकर इंग्लैण्ड से परिचित हुए थे।** उन्होंने यूरोप के आधुनिक मूल्यों-स्वतंत्रता, समता, प्रजातंत्र, समाजवाद, साम्यवाद आदि का परिचय अंग्रेजी शिक्षा के दौरान प्राप्त किया था। यहाँ तक कि उन्होंने अपने देश की परम्परा, इतिहास, धर्म-दर्शन, समाज और संस्कृति के बारे में क्रमश: अंग्रेज लेखकों और अंग्रेजी के माध्यम से जाना। इस बात का उल्लेख पश्चिमी लेखकों के साथ हमारे भारतीय लेखक भी बड़े गौरव के साथ करते हैं। परन्तु यह सत्य वे नजर अन्दाज कर जाते हैं, सम्भवत: दृष्टिभ्रम के कारण उन्हें सही दिखाई ही नहीं पड़ता कि जिस चश्मे से वे पश्चिमी संस्कृति और सभ्यता को देख रहे हैं, उससे उसका गौरवशाली और भव्य रूप सामने उभरता है, और जिस चश्मे से वे अपने देश को और उसकी संस्कृति को देखते हैं, उससे उसका बौना, कुरूप, विकृत रूप सामने आता है। परिणाम होता है कि इस वर्ग का मानस हीन-भाव से भरा हुआ है।

परन्तु यदि **स्वामी दयानन्द** को ही लिया जाय तो वे

अकेले होकर भी अपवाद नहीं है, वरन् एक प्रतीक हैं। और इस एक प्रतीक के आधार पर कहा जा सकता है कि भारत के (एशिया को भी लिया जा सकता है) पुनरुत्थान के लिए न अंग्रेजी राज्य की अपेक्षा थी और न अंग्रेजी शिक्षा की। उसके लिए एक ऐसे व्यक्तित्व की आवश्यकता थी, जो सबसे पहले अपनी अन्तर्दृष्टि से अपने देश, समाज, जाति तथा राष्ट्र के व्यापक और सामूहिक जीवन की जड़ता, विडम्बना, गतिरुद्धता, उसके अन्याय और शोषण की गहराई देख सके, उनके कारणों की ऐतिहासिक, यथार्थ तथा सांस्कृतिक खोज करने में समर्थ हो सके और अन्तत: अपनी विवेक दृष्टि से गतिरोध को दूर करके समाज को मौलिक सर्जनशीलता से संचालित-प्रेरित करने में समर्थ हो सके। यह अवश्य है कि उसके लिए किसी न किसी प्रकार या स्तर का पश्चिमी आधुनिक संस्कृति के वातावरण का संस्पर्श सहायक था। इसी वातावरण में दयानन्द ने जन्म लिया था, यद्यपि यह भी नहीं कहा जा सकता कि अपनी पैंतीस-चालीस वर्ष की अवस्था तक उन्होंने वस्तुत: इस वातावरण का भी एहसास पाया था।

दयानन्द का जन्म गुजरात के टंकारा नामक नगर में सन् १८२३ ई. में हुआ। यह वही समय है, जब बंगाल में राजा राममोहन राय भारतीय पुनरुत्थान में संलग्न थे। वे पश्चिमी संस्कृति से पूर्णत: प्रभावित और अंग्रेजी शिक्षा के समर्थक थे। उनके सामने देश का जो रूप था, वह अंग्रेजी राजनीति और राजनय के द्वारा सत्ता-संघर्ष में राजनीतिक तथा सांस्कृतिक औपनिवेशिक महत्त्वाकांक्षा को प्रतिफलित करने वाला रूप था। निश्चय ही भारतीय समाज की अनेक जड़ताएँ, विकृतियाँ और नृशंस रीतियाँ उनके सामने थीं, परन्तु उनको देखने, समझने और व्यापक सन्दर्भों से जोड़कर लम्बी भारतीय संस्कृति की परम्परा में उनके कारणों के विश्लेषण-विवेचन की दृष्टि उनके पास नहीं थी। और उसका कारण था कि बंगाल और कलकत्ता में अंग्रेज पश्चिमी सभ्यता का चमत्कारी प्रभाव डालने में समर्थ हो चुके थे और पढ़े-लिखे वर्ग के मानस को अपने ढंग से सोचने-समझने के लिए प्रेरित कर सके थे। उनकी नीति के अनुसार भारतीय शिक्षित वर्ग जितना प्रबुद्ध होता जा रहा था, उसका मानस पश्चिमी संस्कृति (प्राय: अंग्रेजी मानना चाहिए) से अभिभूत हो रहा था, अंग्रेजी शिक्षा और संस्कृति को अपनाने की उसकी आकांक्षा बढ़ती जा रही थी। इसका परिणाम यह हुआ कि अपने देश, धर्म, समाज और संस्कृति के प्रति हमारे बौद्धिक वर्ग में हीन-भाव उत्पन्न हुआ। हमारे अधिकांश बड़े नेताओं में भी एक स्तर पर इसका प्रभाव देखा जा सकता है, जो उनकी इस कामना में परिलक्षित हुआ है कि भारतीय समाज का नव-निर्माण पश्चिमीकरण के रूप में होना चाहिए। उनमें अपनेपन की गौरव-भावना की चेतना प्राचीन भारतीय संस्कृति के धर्म, दर्शन, अध्यात्म के कुछ प्रतीकों से सन्तोष ग्रहण करती रही है। इनकी अपेक्षा **दयानन्द जिस पारिवारिक वातावरण में पले, सामाजिक वातावरण में बढ़े और उन्होंने जिस प्रकार की शुद्ध परम्परित संस्कृत शास्त्रों की शिक्षा प्राप्त की, उनमें उनका पश्चिमीकरण से कोई सम्पर्क नहीं था, अत: उन पर पश्चिमी संस्कृति का सीधा कोई भी प्रभाव नहीं स्वीकार किया जा सकता।**

दयानन्द राजा राममोहन राय से लेकर जवाहरलाल नेहरू तक ऐसे भारतीय नेताओं से बिल्कुल अलग थे, जो अपनी समस्त सद्भावनाओं और देश-कल्याण की भावनाओं के बावजूद भारतीय आधुनिकीकरण का रास्ता हर प्रकार से पश्चिमीकरण से होकर गुजरता पाते रहे हैं। और उनके पीछे अधिसंख्यक भारतीय अंग्रेजी शिक्षित वर्ग रहा है, जो पश्चिमीकरण को पश्चिम के बाहरी या ऊपरी अनुकरण के स्तर पर स्वीकार कर अपने को सभ्य मानकर असंख्य भारतीय जनता को उपेक्षा और अवहेलना के भाव से देखता रहा है। यहाँ इस बात के विवेचन का अवसर नहीं है, पर उल्लेख करना जरूरी है कि अंग्रेजी राजनीति के सही परिणाम के रूप में यह शिक्षित वर्ग अपने निहित स्वार्थों में संगठित होता गया है। स्वाधीनता के संघर्ष-काल में यह वर्ग अंग्रेजों के पक्ष में रह कर हर स्तर पर और हर प्रकार से भारतीय जनता की स्वाधीनता की महत्त्वाकांक्षाओं के विरुद्ध कार्य करता रहा है। और उससे भी बड़े दुर्भाग्य की बात यह रही है कि अपनी मानसिक संस्कारगत एकता के कारण जवाहरलाल नेहरू स्वाधीनता-युग में इस वर्ग के अघोषित नेता बन गये। आगे चलकर अपने नेतृत्व को सुदृढ़ बनाने के लिए नेहरू ने इस निहित स्वार्थ के वर्ग से

समझौता कर लिया। अनुकरणमूलक पश्चिमीकरण को प्रगतिशीलता उद्घोषित करते रहकर नेहरू ने इस वर्ग का अपने उन प्रतिद्वंद्वियों के खिलाफ इस्तेमाल किया है, जो मात्र पश्चिमीकरण के रूप में भारत के आधुनिकीकरण को स्वीकार नहीं करते रहे हैं। अन्ततः नेहरू और इस वर्ग का एक ही निहित स्वार्थ बन गया, क्योंकि नेहरू को उनसे शक्ति प्राप्त होती रही है। इस वर्ग के लोग ही क्रमशः भारतीय जीवन के सभी क्षेत्रों में शक्ति और प्रभाव की जगह पाते गये और नेहरू की सत्ता की छत्र-छाया में यह वर्ग अधिकाधिक संगठित और गतिमान् होता गया है।

पुनरुत्थान युग के नेताओं में दयानन्द का स्थान अप्रतिम है, पर उनको विवेकानन्द, लोकमान्य तिलक, मदनमोहन मालवीय और महात्मा गाँधी जैसे नेताओं का अग्रणी माना जा सकता है। इन नेताओं ने भारतीय समाज के पुनर्गठन, विकास और आधुनिकीकरण के लिए भारतीय संस्कृति के मूलाधार को आवश्यक माना है। उनके अनुसार पश्चिम से प्रेरणा पाना, पश्चिम से नया ज्ञान-विज्ञान सीखना एक बात है, पर उसका अन्धानुकरण न हमारे गौरव के अनुकूल है और न हमारी वास्तविक प्रगति के लिए ही उपयोगी है। यह अवश्य है कि इन नेताओं की पद्धति में भिन्नता रही है। कुछ नेता भारतीय प्राचीन गौरवशाली सांस्कृतिक परम्परा के पुनरुत्थान में भारतीय समाज के विकास की संभावना देखते रहे हैं, यद्यपि उन्होंने यह भी स्वीकार किया है कि पश्चिम से हमको ज्ञान-विज्ञान सीखना है। इस दृष्टि से दयानन्द और गाँधी को उनके साथ रखा जा सकता है, क्योंकि दयानन्द ने यह स्वीकार किया है कि भारतीय पुनरुत्थान और आधुनिकीकरण भारत की प्राचीन वैदिक संस्कृति के आधार पर ही संभव है और गाँधी ने माना है कि हमारे सम्पूर्ण विकास की सम्भावनाएँ भारतीय व्यक्तित्व की खोज के आधार पर ही संयोजित की जा सकती हैं। एक स्तर पर ये दो व्यक्तित्व समान माने जा सकते हैं। इन दोनों ने भारतीय जन-समाज से गहरा और आन्तरिक तादात्म्य स्थापित किया था। उन्होंने भारतीय जीवन को उसके वर्तमान यथार्थ तथ्य में और सम्पूर्ण ऐतिहासिक सांस्कृतिक परम्परा में आत्म-साक्षात्कार के स्तर पर ग्रहण किया था, परन्तु दयानन्द और गाँधी के युग, परिवेश, शिक्षा और संस्कार में अन्तर रहा है, और उसके कारण इन दोनों के आत्म-साक्षात्कार की प्रकृति में अन्तर पड़ गया है।

गाँधी भारतीय रंगमंच पर उस समय अवतरित हुए जब दयानन्द के द्वारा उठाये हुए, भारतीय समाज के सारे सवाल पूरी तरह शिक्षित समाज में चर्चा के विषय बन चुके थे। अनेक दिशाओं में उसका मानस आन्दोलित हो चुका था, उसमें आत्म-गौरव और आत्म-विश्वास का भाव जा चुका था। गाँधी के समय तक ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध भारत में राजनीतिक आन्दोलन का स्वरूप अधिक स्पष्टता के साथ उभर आया था, अतः गाँधी ने भारतीय समाज के पुनर्गठन और नवीकरण के प्रश्न को राजनीतिक स्वाधीनता के साथ जोड़ दिया। उनको यह लगना स्वाभाविक था कि पूर्ण स्वाधीनता पा लेने के बाद सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक ढंग से भारतीय जीवन को एक नया संरचात्मक रूप प्रदान करना सम्भव होगा। गाँधी की स्थिति इस दृष्टि से भी विशिष्ट थी कि उनको पश्चिम की संस्कृति का गहरा परिचय था। दयानन्द को भी अन्ततः भारतीय जीवन के पुनर्गठन में पश्चिम की सांस्कृतिक चुनौती का सामना करना पड़ा था, पर उन्होंने उसका समुचित समाधान पश्चिमी संस्कृति के अन्तर्वर्ती तत्त्वों के माध्यम से प्रस्तुत नहीं किया, जैसी सुविधा गाँधी को प्राप्त थी। वस्तुतः किसी सशक्त और गतिशील संस्कृति के संघात (Impact) को सहने का सबसे दक्ष उपाय भी यही है कि गाँधी के समान उस संस्कृति के सबल तत्त्वों का विकास अपनी भूमिका पर करके उसका सामना किया जाय। **दयानन्द के सामने चुनौती थी, पर उसकी शक्ति का और उसके सामर्थ्य के स्रोत का उन्हें ठीक अन्दाज नहीं था, अतः उनके पास उस चुनौती का सामना करने के लिए अपनी ही सांस्कृतिक परम्परा में अन्तर्निहित शक्ति और ऊर्जा के अनुसन्धान के अलावा कोई उपाय नहीं था।**

शेष भाग अगले अंक में.......

अग्नि और जल संसार के सब व्यवहारों के कारण हैं, इस से गृहस्थजन विशेष कर अग्नि और जल के गुणों को जानें और गृहस्थ के सब काम सत्य व्यवहार से करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२४

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग तीन वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ नि:शुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आइ**, पावर हाऊस के सामने,

जयपुर रोड, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**091104000057530**

IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन-जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग-यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था-भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था-भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद-प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था-भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था-भजन' (चैनल) डिश-टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा-स्काई, वीडियोकोन, बिग-टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार-बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

सृष्टि उत्पत्ति क्यों और कैसे ? मानव का प्रादुर्भाव कहाँ?

- आचार्य पं. उदयवीर जी शास्त्री

सृष्टि का सर्वोत्कृष्ट प्राणी मानव है। मानव को अपनी इस स्थिति के विषय में कदाचित् अभिमान हो सकता है, पर अधिकाधिक उन्नति कर लेने पर भी यह सृष्टि रचना में सर्वथा असमर्थ रहता है। इसका कारण है, मानव जब अपने रूप में प्रकट होता है, उससे बहुत पूर्व सृष्टि की रचना हो चुकी होती है, इसलिये यह प्रश्न ही नहीं उठता कि मानव सृष्टि रचना कर सकता है। तब यह समस्या सामने आती है कि इस दुनिया को किसने बनाया होगा?

भारतीय प्राचीन ऋषियों ने इस समस्या का समाधान किया है। जगत को बनाने वाली शक्ति का नाम 'परमात्मा' है, इसको ईश्वर, परमेश्वर, ब्रह्म आदि अनेक नामों से पुकारा जाता है। यह ठीक है कि परमात्मा इस पृथिवी, चाँद, सूरज आदि समस्त लोक-लोकान्तर रूप जगत् को बनाने वाला है, परन्तु जिस मूलतत्त्व से इस जगत् को बनाया जाता है, वह अलग है। उसका नाम प्रकृति है। प्रकृति त्रिगुणात्मक कही जाती है। वे तीन गुण हैं- सत्त्व, रजस् और तमस्। इन तीन प्रकार के मूल तत्त्वों के लिये 'गुण' पद का प्रयोग इसीलिये किया जाता है कि ये तत्त्व आपस में गुणित होकर, एक-दूसरे में मिथुनीभूत होकर, परस्पर गुँथकर ही जगद्रूप में परिणत होते हैं। जगत् की रचना पुण्यापुण्य, धर्माधर्म रूप शुभ-अशुभ कार्मों के करने और उनके फलों को भोगने के लिये की जाती है। इन कर्मों को करने और भोगने वाला एक और चेतन तत्त्व है, जिसको जीवात्मा कहा जाता है। ये तीनों पदार्थ अनादि हैं- ईश्वर, जीवात्मा और प्रकृति।

जगत उत्पन्न होता है या नहीं?

प्रश्न-यह जगत् कभी उत्पन्न नहीं होता, अनादि काल से ऐसा ही चला आता है और अनन्त काल तक ऐसा ही चला जायगा, ऐसा मान लेने पर इसके बनने-बनाने का प्रश्न ही नहीं उठता, तब इसको बनाने के लिए ईश्वर की कल्पना करना व्यर्थ है। यह चाहे प्रकृति का रूप हो या कोई रूप हो, अनादि होने से ईश्वर की कल्पना अनावश्यक है।

उत्तर-जगत् को जिस रूप में देखा जाता है, उससे इसका विकारी होना स्पष्ट होता है। यदि जगत् अनादि-अनन्त एक रूप हो, तो यह नित्य माना जाना चाहिये, नित्य पदार्थ अपने रूप में कभी परिणामी या विकारी नहीं होता, परन्तु जागतिक पदार्थों में प्रतिदिन परिणाम होते देखे जाते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि पृथिव्यादि लोक-लोकान्तरों की दृश्यमान स्थिति अपरिणामिनी अथवा अविकारिणी नहीं है। इसमें परिणाम का निश्चय होने पर यह मानना पड़ेगा कि यह बना हुआ पदार्थ है, तब इसके बनाने वाले को भी मानना होगा।

प्रश्न-पृथिव्यादि को विकारी मानने पर भी बनाने वाले की आवश्यकता न होगी। जिन मूलतत्त्वों से इनका परिणाम होना है, वे स्वत: इस रूप में परिणत होते रहते हैं। संसार में अनेक पदार्थ स्वत: होते देखे जाते हैं। अनेक स्वचालित यन्त्रों का आज निर्माण हो चुका है।

उत्तर-पृथिव्यादि समस्त जगत् जड़ पदार्थ है, चेतना-हीन। इसका मूल उपादान तत्त्व भी जड़ है। किसी भी जड़ पदार्थ में चेतन की प्रेरणा के बिना कोई क्रिया होना संभव नहीं। चेतना के सहयोग के बिना किसी जड़ पदार्थ में स्वत: प्रवृत्ति होती नहीं देखी जाती। इसके लिये न कोई युक्ति है, न दृष्टान्त। स्वचालित यन्त्रों के विषय में जो कहा गया, उन यन्त्रों का निर्माण तो प्रत्यक्ष देखा जाता है। उनको बनाने वाला शिल्पी उसमें ऐसी व्यवस्था रखता है, जिसे स्वचालित कहा जाता है। यन्त्र अपने-आप नहीं बन गया है, उसको बनाने वाला एक चेतन शिल्पी है और उस यन्त्र की निगरानी व साज-सँवार बराबर करनी पड़ती है, यह सब चेतन- सहयोग-सापेक्ष है, इसलिये यह समझना कि पृथिव्यादि जगत् अपने मूल उपादान तत्त्वों से चेतन निरपेक्ष

रहता हुआ स्वत: परिणत हो जाता है, विचार सही नहीं है। फलत: जगत् के बनाने वाले ईश्वर को मानना होगा।

प्रकृति की आवश्यकता?

प्रश्न - आपने यह स्पष्ट किया कि ईश्वर को मानना आवश्यक है। यदि ऐसा है, तो केवल ईश्वर को मानने से कार्य चल सकेगा। ईश्वर को सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् माना जाता है, वह अपनी शक्ति से जगत् को बना देगा, उसके अन्य कारण प्रकृति की क्या आवश्यकता है? कतिपय आचार्यों ने इस विचार को मान्यता दी है।

उत्तर- ईश्वर जगत् को बनाने वाला अवश्य है, पर वह स्वयं जगत् के रूप में परिणत नहीं होता। ईश्वर चेतन तत्त्व है, जगत् जड़ पदार्थ है। चेतना का परिणाम जड़ अथवा जड़ का परिणाम चेतन होना संभव नहीं। चेतन स्वरूप से सर्वथा अपरिणामी तत्त्व है। यदि चेतन ईश्वर को ही जड़ जगत् के रूप में परिणत हुआ माना जाय तो यह उस अनात्मवादी की कोटि में आजाता है, जो चेतन की उत्पत्ति जड़ से मानता है। कारण यह है कि यदि चेतन जड़ बन सकता है, तो जड़ को भी चेतन बनने से कौन रोक सकता है? इसलिये चेतन से जड़ की उत्पत्ति अथवा जड़ से चेतन की उत्पत्ति मानने वाले दोनों वादी एक ही स्तर पर आ खड़े होते हैं। फलत: यह सिद्धान्त बुद्धिगम्य है कि न चेतन जड़ बनता है और न जड़ चेतन बनता है। चेतन सदा चेतन है, जड़ सदा जड़ है। इससे यह स्पष्ट होता है कि जड़ जगत् जिस मूल तत्त्व का परिणाम है, वह जड़ होना चाहिये, इसलिये चेतन ईश्वर से अतिरिक्त मूल उपादान तत्त्व मानना होगा, उसी का नाम प्रकृति है।

जब यह कहा जाता है कि सर्वशक्तिमान् ईश्वर अपनी शक्ति से जगत् को उत्पन्न कर देगा, उस समय प्रकृति को ही उसकी शक्ति के रूप में कथन कर दिया जाता है। वैसे सर्वशक्तिमान् पद के अर्थ में यही भाव अन्तर्निहित है कि जगत् की रचना करने में ईश्वर को अन्य किसी कर्त्ता के सहयोग की अपेक्षा नहीं रहती। वह इस कार्य के लिये पूर्ण शक्त है, अप्रतिम समर्थ है। फलत: यह जगत् परिणाम प्रकृति का ही होता है, ईश्वर केवल इसका निमित्त, प्रेरयिता,नियन्ता व अधिष्ठाता है। यही सत्य स्वरूप प्रकृति सब जगत् का मूल घर और स्थिति का स्थान है।

इस प्रसंग में सत्यार्थप्रकाश [स्थूलाक्षर, वेदानन्द संस्करण, पृ. १९१, पंक्ति १०-१२] के अन्दर एक वाक्य है, जिसे अस्पष्टार्थ कहा जाता है। वह वाक्य है - 'यह सब जगत् सृष्टि के पूर्व असत् के सदृश और जीवात्मा, ब्रह्म और प्रकृति में लीन होकर वर्त्तमान था, अभाव न था- इस वाक्य के अभिमत अर्थ को स्पष्ट करने व समझने के लिये इसमें से दो अवान्तर वाक्यांशों का विभाजन करना होगा। इस वाक्य में से 'और जीवात्मा ब्रह्म' इन पदों को अलग करके रख लीजिये फिर शेष वाक्य को पढ़िये, वह इस प्रकार होगा- 'यह सब जगत् सृष्टि के पूर्व असत् के सदृश और प्रकृति में लीन होकर वर्त्तमान था, अभाव न था।' इतना वाक्य एक पूरे अर्थ को व्यक्त करता है। जगत् जो अब हमारे सामने विद्यमान है, यह सृष्टि के पूर्व अर्थात् प्रलय अवस्था में असत् के सदृश था, सर्वथा असत् या तुच्छ न था, कारण यह है कि यह प्रकृति में लीन होकर वर्तमान था, तात्पर्य यह कि कारण-रूप से विद्यमान था, इससे प्रतीत होता है कि ऋषि ने कार्य-कारणभाव में सत्कार्य सिद्धान्त को स्वीकार किया है। प्रलय अवस्था में जगद्रूप कार्य कारण रूप से विद्यमान रहता है, उसका सर्वथा अभाव नहीं हो जाता।

जो पद हमने उक्त वाक्य में से अलग करके रक्खे हैं, वे दो अवान्तर वाक्यों को बनाते हैं -१-'और जीवात्मा वर्त्तमान था'। २- 'ब्रह्म वर्त्तमान था' तात्पर्य यह कि प्रलय अवस्था में प्रकृति के साथ जीवात्मा और ब्रह्म भी वर्तमान थे। इस प्रकार उक्त पंक्ति से ऋषि ने उस अवस्था में तीन अनादि पदार्थों की सत्ता को स्पष्ट किया है तथा इस मन्तव्य का एक प्रकार से प्रत्याख्यान किया है, जो उस अवस्था में एक मात्र ब्रह्म की सत्ता को स्वीकार करते हैं, जीव तथा प्रकृति की स्थिति को नहीं मानते, इनका उद्भव ब्रह्म से ही मान लेते हैं।

तीन अनादि पदार्थों के मानने पर जगद्रचना की व्याख्या सर्वाधिक निर्दोष की जा सकती है। कारण यह है कि लोक में किसी रचना के हेतु तीन प्रकार के देखे जाते हैं। प्रत्येक कार्य का कोई बनाने वाला होता है, कुछ पदार्थ होते हैं, जिनसे वह कार्य बनाया जाता है, कुछ सहयोगी साधन होते हैं। पहला कारण निमित्त कहलाता है, दूसरा

उपादान और तीसरा साधारण। संसार में कोई ऐसा कार्य संभव नहीं, जिसके ये तीन कारण नहीं है। जब दृश्यादृश्य जगत् को कार्य माना जाता है तो उसके तीनों कारणों का होना आवश्यक है। इसमें जगत् की रचना का निमित्त कारण ईश्वर, उपादान कारण प्रकृति तथा जीवों के कृत शुभाशुभ कर्म अथवा धर्माधर्म आदि साधारण कारण होते हैं, इसलिये इन तीनों पदार्थों को अनादि माने बिना सृष्टि की निर्दोष व्याख्या नहीं की जा सकती।

ब्रह्म से ही जगत्-उत्पत्ति नहीं?

प्रश्न-वेदान्त दर्शन पर विचार करने वाले तथाकथित नवीन आचार्यों की यह मान्यता है कि एक मात्र ब्रह्म को वास्तविक तत्त्व मानने पर सृष्टि की व्याख्या की जा सकती है। उनका कहना है कि जगत् के निमित्त और उपादान कारण को अलग मानना आनावश्यक है। एक मात्र ब्रह्म स्वयं अपने से जगत् को उत्पन्न कर देता है, उसे अन्य उपादान की अपेक्षा नहीं। लोक में ऐसे दृष्टान्त देखे जाते हैं। मकड़ी अपने आप से ही जाला बुन देती है, बाहर से उसे कोई साधन-सहयोग लेने की अपेक्षा नहीं होती, ऐसे ही जीवित पुरुष से केश-नख स्वत: उत्पन्न होते रहते हैं। इसी प्रकार ब्रह्म अपने से ही जगत् को उत्पन्न कर देता है।

उत्तर - यह बात पहले कही जा चुकी है कि यदि ब्रह्म अपने से जगत् को बनावे तो वह विकारी या परिणामी होना चाहिये। ब्रह्म चेतन तत्त्व है, चेतन कभी विकारी नहीं होता। इसके अतिरिक्त यह बात भी है कि चेतन ब्रह्म का परिणाम जगत् जड़ कैसे हो जाता? क्योंकि कारण के विशेष गुण कार्य में अवश्य आते हैं। या तो जगत् भी चेतन होता, या फिर कार्य जड़-जगत् के अनुसार उपादान कारण ईश्वर या ब्रह्म को भी जड़ मानना पड़ता, पर न जगत् चेतन है, और न ईश्वर जड़, इसलिये ईश्वर को जगत् का उपादान कारण नहीं माना जा सकता।

ब्रह्म उपादान से जगत् की उत्पत्ति में मकड़ी आदि के जो दृष्टान्त दिये जाते हैं, उनकी वास्तविकता की ओर किसी ब्रह्मोपादानवादी ने क्यों ध्यान नहीं दिया, यह आश्चर्य की बात है। ये दृष्टान्त उक्त मत के साधक न होकर केवल बाधक हैं। मकड़ी एक प्राणी है, जिसका शरीर भौतिक या प्राकृतिक है और उसमें एक चेतन जीवात्मा का निवास है। उस प्राणी द्वारा जो जाला बनाया जाता है, वह उस भौतिक शरीर का विकार या परिणाम है, चेतन जीवात्मा का नहीं। यह भी ध्यान देने की बात है कि शरीर से जाला उसी अवस्था में बन सकता है, जब शरीर का अधिष्ठाता चेतन जीवात्मा वहाँ विद्यमान रहता है। वह स्थिति इस बात को स्पष्ट करती है कि केवल जड़ तत्त्व चेतन के सहयोग के बिना स्वत: विकृत या परिणत नहीं होता। दृष्टान्त से स्पष्ट है कि जाला रूप जड़ विकार जड़ शरीर का है, चेतन जीवात्मा का नहीं। इस दृष्टान्त का उद्भावन करने वाले उपनिषद् (यथोर्णनाभि: सृजते गृह्णते च) वाक्य में यही स्पष्ट किया है कि जैसे मकड़ी जाला बनाती और उसका संहार करती है, उसी प्रकार अविनाशी ब्रह्म से यह विश्व प्रादुर्भूत होता है।

उपनिषद् के उस वाक्य में 'यथा' और 'तथा' शब्द ध्यान देने योग्य हैं। जैसे मकड़ी जाला बनाती और उपसंहार करती है- **'तथाऽक्षरात्संभवतीह विश्वम्'**, वैसे अविनाशी ब्रह्म से यहाँ विश्व प्रादुर्भूत होता है। अब देखना यह है कि जाला मकड़ी के भौतिक शरीर से परिणत होता है और बनाने वाला अधिष्ठाता चेतन आत्मा वहाँ इस प्रवृति का प्रेरक है, चेतन स्वयं जाला नहीं बनता, ऐसे ही ब्रह्म अपने प्रकृति रूप देह से विश्व का प्रादुर्भव करता है। समस्त विश्व परिणाम प्रकृति का ही है, प्रकृति से होने वाली समस्त प्रवृत्तियों का प्रेरक व अधिष्ठाता परमात्मा रहता है। वह स्वयं विश्व के रूप में परिणत नहीं होता, इसलिए वह विश्व का केवल निमित्त कारण है, उपादान कारण नहीं हो सकता।

जगत् का निर्माण क्यों?

प्रश्न- यह ठीक है कि सृष्टिकर्त्ता ईश्वर है और वह प्रकृति मूल उपादान से जगत् की रचना करता है, परन्तु प्रश्न है, जगत् की रचना में उसका क्या प्रयोजन है? जगत् की रचना किस लक्ष्य को लेकर की जाती है? यदि इसका कोई प्रयोजन ही नहीं, तो रचना व्यर्थ है, उसने क्यों ऐसा किया? वह तो सर्वज्ञ है, फिर ऐसी निष्प्रयोजन रचना क्यों?

शेष भाग अगले अंक में.....

श्रद्धेय भक्त फूल सिंह के आध्यात्मिक गुरु स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती

- चन्द्राम आर्य

हरियाणा प्रान्त आर्य समाज का गढ़ रहा है। इसके प्रचार-प्रसार का मुख्य कारण यहाँ के निवासियों का व्यवसाय रहा है, जिसमें एक कृषि करना तथा दूसरा युद्ध करना। इसका भी मुख्य कारण है- शहर की न्यूनता। यहाँ के लोग परिश्रमी, साहसी, सरलचित्त और भावुक हैं, अत: इनके लिए रूढ़ियों को तोड़ना बहुत सरल है। हरियाणे में आर्य समाज का प्रचार आरम्भ बहुत शीघ्रता से हुआ। रोहतक और हिसार आर्य समाज के प्रमुख केन्द्र रहे हैं। जब लाला लाजपतराय को १९०९ में निर्वासन का दण्ड दिया गया तो उस समय हरियाणा के आर्य समाजियों में असन्तोष की लहर दौड़ गई। इस असन्तोष की लहर ने अंग्रेज शासकों को चौकन्ना कर दिया और वे आर्य जनता को अनेक प्रकार से तंग करने लगे। रोहतक जिले में सरकारी अधिकारियों ने जब आर्य समाजियों पर दमन चक्र चलाया तो उस समय वहाँ के प्रमुख आर्य समाजियों ने एक शिष्ट मण्डल महात्मा मुन्शीराम जी से मिलने के लिए गुरुकुल काँगड़ी भेजा। शिष्ट मण्डल ने महात्मा मुन्शीराम को अंग्रेज सरकार की दमनकारी नीति कह सुनाई। उस समय मुन्शीराम जी ने पं. ब्रह्मदत्त (स्वामी ब्रह्मानन्द) को रोहतक जिले में आर्य समाज के प्रचारार्थ भेजा।

जन्म-स्थान तथा कार्यक्षेत्र- स्वामी ब्रह्मानन्द जी का जन्म बिहार प्रान्त के आरा जिले के डुमरा ग्राम में सं. १९२५ वि. (सन् १८६८) माघ शुक्ला पंचमी को माता श्रीमती देवमूर्ति की कोख से श्री रामगुलाम सिंह के घर पर हुआ। ब्राह्मणों ने नामकरण संस्कार में आपका नाम ब्रह्मदत्त रखा जो बाद में संन्यास लेने के उपरान्त संन्यास गुरु स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती ने स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती रखा। आपके माता-पिता दोनों ईश्वरभक्त, धर्मपरायण एवं सद्विचारों के थे। स्नेहमयी माता की गोद में लोरी के साथ-साथ विशुद्ध धर्म-परायणता घुट्टी के रूप में मिली। यही कारण है जब आप आरा के हाईस्कूल में शिक्षा अर्जित कर रहे थे, तब आपको किसी आर्य विद्वान् से सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने को मिला। आपका मन सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर सत्य-असत्य का निर्णय करने में तल्लीन हो गया। तभी से आप वैदिक धर्म, महर्षि दयानन्द एवं आर्य समाज के दीवाने हो गए।

शिक्षा-अर्जित करने के उपरान्त सर्व प्रथम श्री ब्रह्मदत्त जी ने सन् १८९० ई. में "आर्यावर्त" नामक साप्ताहिक पत्र के सम्पादन का कार्य निर्भ्रान्त एवं सुचारु रूप से किया। अपने सम्पादकत्व काल में आपने "आर्यावर्त" पत्र के द्वारा आर्य समाज के सिद्धान्तों का बहुत ही उत्कृष्टता से प्रचार-प्रसार किया और सामयिक परिस्थितियों पर लेख लिखकर पाठकों के हृदयों को उद्वेलित किया। जो भी लेख पढ़ता था, वह आपके अग्रिम लेखों का इन्तजार करता था। इसके उपरान्त आप कलकत्ते से निकलने वाले हिन्दी पत्र "भारत मित्र" के सम्पादक बन गये। इस पत्र को भी आपने आर्य सिद्धान्तों का संवाहक पत्र बना दिया। इसमें महर्षि दयानन्द के भी लेख छपते थे। आपके लेखों की माँग उत्तरोत्तर बढ़ने लगी। हरियाणा के गुडियानी ग्राम (तब झज्जर) के निवासी बाबू बालमुकुन्द गुप्त को भी इस पत्र का सम्पादक रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। कलकत्ते में रहते हुए पं. ब्रह्मदत्त जी आर्य सिद्धान्तों की पुष्टि में व्याख्यान भी देते रहे। आपकी वाणी में मधुरता एवं गाम्भीर्य था। आपको इतिहास का काफी ज्ञान था।

दुर्भाग्य से उन दिनों पं. दीनदयाल व्याख्यान वाचस्पति के कुछ अनुयायी आपके साथ "भारत मित्र" में कार्य करने के लिए आ गये। उनके विचारों से आप सहमत नहीं हो सके, क्योंकि उन्होंने इस पत्र पर पौराणिक प्रभाव डालना चाहा। आप किसी भी कीमत पर आर्य सिद्धान्तों से समझौता नहीं करना चाहते थे। अन्त में आपने वहाँ से त्याग-पत्र दे दिया। आप वहाँ से गुरुकुल काँगड़ी हरिद्वार में महात्मा मुन्शीराम के पास आ गये। वहाँ से आर्य समाज का प्रचार-प्रसार करने के लिए पंजाब व हरियाणा में चले गये। हरियाणा प्रान्त में आपने पानीपत, रोहतक और हिसार में वैदिक धर्म और आर्य सिद्धान्तों का बहुत प्रचार किया। यहाँ पर आपने लगभग दस हजार नए आर्य समाजी बनाए। सन् १९१८ में भक्त फूलसिंह पटवारी अपनी धर्मपत्नी श्रीमती धूपा देवी के साथ स्वामी ब्रह्मानन्द जी से वानप्रस्थाश्रम की दीक्षा लेने के लिए गए। वहीं से दीक्षित होकर भक्त फूलसिंह व माता धूपा देवी ने सर्वमेध यज्ञ करके सम्पूर्ण जीवन गुरुकुल और गरीब जनता के लिए अर्पित कर दिया। आपने गुरुकुल भैंसवाल, गुरुकुल झज्जर व गुरुकुल चित्तौड़ में मुख्याधिष्ठाता एवं आचार्य पद पर अनेक वर्षों तक

कार्य किया।

सन् १९२५ में आपने स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती से संन्यास आश्रम की दीक्षा ली। उसके उपरान्त ही आप पं. ब्रह्मदत्त से स्वामी ब्रह्मानन्द नाम से विख्यात् हुए। आपकी कार्य-क्षमता बुद्धिमत्ता एवं बृहद्ज्ञान को देखकर रायबहादुर रामविलास शारदा ने आपको ''वैदिक यन्त्रालय''अजमेर के मैनेजर पद पर कार्य करने के लिए बुला लिया। आपने बड़ी निष्ठा एवं श्रद्धा से यहाँ कार्य किया।

महात्मा मुन्शीराम जी अपने साप्ताहिक पत्र ''सद्धर्म प्रचारक'' को उर्दू से बदलकर हिन्दी में निकालना चाहते थे। इस कार्य के सम्पादन के लिए आप अजमेर से जालन्धर चले गए। ''सद्धर्म प्रचारक'' पत्र थोड़े दिनों के उपरान्त जालन्धर से गुरुकुल काँगड़ी चला गया, अत: आप भी काँगड़ी पहुँचे, लगभग पाँच वर्ष तक आप गुरुकुल काँगड़ी में रहे। ''सद्धर्म प्रचारक'' पत्र ने आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में अपना अमिट योगदान दिया। जब आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की बागडोर लाला मुन्शीराम के हाथों में आ गई, तब तो यह पत्र एक प्रकार से सभा का मुखपत्र ही बन गया था। इस प्रकार लेखन क्षेत्र में जो योगदान स्वामी ब्रह्मानन्द जी का रहा, वह सार्वजनिक, सामाजिक, धार्मिक व राजनैतिक क्षेत्र में भी कम नहीं रहा। आर्य समाज द्वारा उस काल में चलाये गये सभी आन्दोलनों में आपकी अहम भूमिका रही। हैदराबाद सत्याग्रह के समय तो आपने भक्त फूलसिंह जी के साथ ग्राम-ग्राम में जाकर ऐसा माहौल बनाया कि हजारों की संख्या में सत्याग्रही आपके साथ रोहतक से हैदराबाद के लिए रवाना हुए। भक्त फूलसिंह जी ने जब मोठ ग्राम के दलितों (चमारों) के कुएँ के लिए नारनौंद ग्राम में अनशन व्रत किया, तब आपने घूम-घूमकर अनशन व्रत के पक्ष में वातावरण तैयार किया। आपको अनेक कठिनाइयों, संकटों का सामना भी करना पड़ा, परन्तु आप अपने कर्त्तव्य से कभी विमुख नहीं हुए। आपका हरियाणा में प्रचार का इतना प्रभाव पड़ा कि वहाँ के आम जन आपको ''जाट गुरु'' कहते थे। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से आपने लगभग १२ वर्ष तक हरियाणा में वैदिक धर्म व आर्य समाज के सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार किया। रोहतक जिले में तो आपने आर्य समाज की अमर बेल को उस समय सींचा, जबकि उसे विचार रूपी रस की सर्वाधिक आवश्यकता थी। लेखनी और वाणी के धनी स्वामी ब्रह्मानन्द जी जैसे-जैसे उमर ढलती गई, रुग्ण अवस्था के जाल में फँसते गये। इस प्रकार आयु के अन्तिम दिनों में आप आर्य समाज दीवानहाल में रहने लगे। आपका स्वास्थ्य वहाँ पर दिन प्रतिदिन गिरने लगा। मर्ज बढ़ता गया ज्यों ज्यों दवा की। वहाँ से आपके सुयोग्य सुपुत्र डॉ. अनन्तानन्द जी, जो कि गुरुकुल काँगड़ी में आयुर्वेद महाविद्यालय के आचार्य थे, गुरुकुल में ले गये। वहाँ पर आपका काफी उपचार हुआ, परन्तु आप स्वस्थ नहीं हो सके। वहाँ सन् १९४८ में ८० वर्ष की आयु में आपका देहावसान हो गया। आर्य जनता में शोक की लहर छा गई। महर्षि दयानन्द सरस्वती की आर्य समाज रूपी वाटिका का पुष्प और मुरझा गया, परन्तु यह वाटिका उनके त्याग-तप से और भी पल्लवित हुई है। मुझे यह लिखने में संकोच नहीं है कि आज जो आर्य समाज बचा हुआ है, वह ऐसे ही महापुरुषों के तप और त्याग का फल है। उनका यश रूपी शरीर हम सबके हृदयों में सुगन्धित है। यह सुगन्ध हम सबके लिये प्रेरणादायी बनी रहे। भगवान हम सब आर्यों को शक्ति व सद्‌बुद्धि दे कि हम अपने महापुरुषों के अधूरे कार्यों को पूरा कर सकें। अन्त में मैं डॉ. धर्मवीर कुण्डू रोहतक व श्री बलबीर शास्त्री भैंसवाल का आभारी हूँ कि आपने श्रद्धेय स्वामी ब्रह्ममानन्द का चित्र उपलब्ध करवाने में सहयोग प्रदान किया, जिससे में दो शब्द स्वामी जी के बारे में लिख सका।

पवित्र अनशन की समाप्ति पर महात्मा गाँधी का जो धन्यवाद पत्र भक्त फूलसिंह को मिला, वह इस प्रकार था....

हरिजन सेवक २६/१०/१९४०

मुझे श्री वियोगी हरि जी के पत्रों से भक्त फूलसिंह जी के पवित्र अनशन व्रत का समाचार मिला। भक्त जी के हृदय में हरिजनों के प्रति किए गये अन्याय का गहरा दु:ख था। उन की दोनों पक्षों के प्रति शुभकामना थी। हरिजनों को पीने के पानी का बड़ा कष्ट था, इसे दूर करने के लिए उन्हें अनशन व्रत करना पड़ा।

इनका अनशन व्रत मोठ के मुसलमान रांघड़ों तथा जाटों को अपने पवित्र प्रेम से उन्हें सच्चा रास्ता दिखाने का था। यह व्रत केवल धर्म-बुद्धि से तथा ईश्वर विश्वास पर किया गया था। व्रत काल में अनेक बार असफलता के बादल मँडलाए, परन्तु भक्ति जी का धैर्य और ईश्वर विश्वास प्रबल था। भगवान की ज्योति में वे अपनी सफलता देखते थे। समय आया, वे अपने व्रत में सफल हुए। मेरे राजकोट के अनशन व्रत में विश्वास की कमी थी। प्रतिकूल स्थिति ने मेरे मन को हिला दिया, जिससे मैं अपने व्रत में असफल रहा। -एम.के. गाँधी

- १३२५/३८, 'ओ३म् आर्य निवास',
गली नं. ५, विज्ञान नगर, आदर्श नगर, अजमेर

वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत

वेदभाष्य, वेदभाषाभाष्य, मूलवेद, वेदांगप्रकाशन और वैदिक साहित्य

पिछले अंक का शेष भाग.......

क्रमांक नाम पुस्तक	मूल्य
१८५. श्वसन क्रियाएं एवं प्राणायाम (सी.डी.)	४०.००
१८६. मोटापा (सी.डी.)	४०.००
१८७. योगनिद्रा (सी.डी.)	३०.००
१८८. ध्यान (सी.डी.)	३०.००
१८९. योगनिद्रा (कैसेट)	३०.००
१९०. ध्यान (कैसेट)	३०.००

श्री रावसाहब रामविलास शारदा

१९१. आर्य धर्मेन्द्र जीवन (सजिल्द) (स्वामी दयानन्द जी का जीवन चरित्र)	१००.००

डॉ. रामप्रकाश आर्य

१९२. महर्षि दयानन्द सरस्वती (जीवन एवं उनकी हिन्दी रचनाएं)	२५०.००

महर्षि गार्ग्य

१९३. सामपद संहिता सजिल्द (पदपाठ:)	२५.००

डॉ. ब्रह्मानन्द शर्मा

१९४. वेदार्थ विमर्शः (वेदार्थ पारिजात खण्डनम्)	२५.००
१९५. डॉ. भवानीलाल भारतीय अभिनन्दन ग्रन्थ (बढ़िया)	५१.००
१९६. डॉ. भवानीलाल भारतीय अभिनन्दन ग्रन्थ (साधारण)	३१.००

महामहोपाध्याय पं. आर्यमुनि

१९७. वाल्मीकि रामायण-(सजिल्द) आर्य टीका सहित (प्रथम भाग)	१६०.००
१९८. वाल्मीकि रामायण-(सजिल्द) आर्य टीका सहित (द्वितीय भाग)	१६०.००

क्रमांक नाम पुस्तक	मूल्य
१९९. महाभारत आर्य टीका (प्रथम भाग)	
२००. महाभारत आर्य टीका (द्वितीय भाग)	

Prof. Tulsi Ram

201. The Book Of Prayer (Aryabhivinaya)	35.00
202. Kashi Debate on Idol Worship	20.00
203. A Critique of Swami Narayan Sect	20.00
204. An Examination of Vallabha Sect	20.00
205. Five Great Rituals of the Day (Panch Maha Yajna Vidhi)	20.00
206. Bhramochhedan (New Edition)	25.00
207. Bhranti Nivarana	35.00
208. **Atmakatha**- Swami Dayanand Saraswati	20.00
209. Bhramochhedan	5.00
210. Chandapur Fair	5.00

DR. KHAZAN SINGH

211. Gokaruna Nidhi	12.00

DEENBANDHU HARVILAS SARDA

212. Life of Dayanand Saraswati	200.00

SWAMI SATYA PRAKASH SARASWATI

213. Dayanand and His Mission	5.00
214. Dayanand and interpretation of Vedas	5.00
२१५. पवित्र धरोहर (सी.डी.)	५१.००

आचार्य उदयवीर शास्त्री

२१६. जीवन के मोड़ (सजिल्द)	२५०.००

अन्य लेखकों के ग्रन्थ-निम्न पुस्तकों पर कमीशन देय नहीं है।

क्रमांक नाम पुस्तक	मूल्य
श्री गजानन्द आर्य	
२१७. वेद सौरभ	१००.००
२१८. Gokarunanidhi (Eng.)	२५.००
डॉ. सुरेन्द्र कुमार (भाष्यकार एवं समीक्षक)	
२१९. मनुस्मृति	३००.००
२२०. महर्षि दयानन्द वर्णित शिक्षा पद्धति	१५०.००
सत्यानन्द वेदवागीशः	
२२१. दयानन्द वेदभाष्य भावार्थ प्रकाश (उत्तरखण्ड)	३००.००
२२२. दयानन्द वेदभाष्य भावार्थ प्रकाश (पूर्वखण्ड)	३५०.००
डॉ. वेदपाल सुनीथ	
२२३. माध्यन्दिन शतपथीय यूप ब्राह्मणों का भाष्य (अजिल्द)	५०.००
२२४. शतपथ ब्राह्मण के पशुयाग का भाष्य(अजिल्द)	७०.००
२२५. शतपथीययूपं ब्राह्मण का भाष्य एवं शतपथ ब्राह्मण के पशुयाग का भाष्य (सजिल्द)	१५०.००
२२६. यजुर्वेद–भाष्य विवरणम् (विशिष्ट संस्करण)	५०.००
२२७. यजुर्वेद–भाष्य विवरणम् (साधारण संस्करण)	२५.००
आचार्य सत्यव्रत शास्त्री	
२२८. उणादिकोष	८०.००
२२९. दयानन्द लहरी	५०.००
प्रो. रामप्रसाद वेदालंकार	
२३०. वेदाध्ययन (भाग–१)	६.००
२३१. वेदाध्ययन (भाग–२)	७.००
२३२. वेदाध्ययन (भाग–१०)	६.००
२३३. प्रार्थना सुमन	४.००
२३४. ईश्वर! मुझे सुखी कर	
२३५. कौन तुझको भजते हैं?	८.००
२३६. पावमानी वरदा वेदमाता	९.००
२३७. प्रभात वन्दन	६.००

क्रमांक नाम पुस्तक	मूल्य
२३८. भक्ति भरे भजन	११०.००
२३९. विनय सुमन (भाग–३)	६.००
२४०. वेद सुधा	८.००
२४१. वेद पढ़ो और पढ़ाओ	१००.००
२४२. वैदिक रश्मियाँ (भाग–२)	६.००
२४३. वैदिक रश्मियाँ (भाग–३)	५.००
२४४. वैदिक रश्मियाँ (भाग–४)	९.००
२४५. वैदिक रश्मियाँ (भाग–५)	६.००
२४६. Quest for the Infinite	20.00
२४७. वैदिक आदर्श परिवार (बड़ा आकार)	१५०.००
श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु	
२४८. गंगा ज्ञान धारा (भाग–१)	
२४९. गंगा ज्ञान धारा (भाग–२)	१६०.००
२५०. गंगा ज्ञान धारा (भाग–३)	१७०.००
२५१. अमर कथा पं. लेखराम	६०.००
२५२. कवि मनीषी पं. चमूपति	१६०.००
२५३. कुरान सत्यार्थ प्रकाश के आलोक में	२००.००
२५४. निष्कलंक दयानन्द	१६०.००
२५५. मेहता जैमिनी	१५०.००
२५६. कुरान वेद की छांव में	१५०.००
२५७. जम्मू शास्त्रार्थ	३०.००
२५८. महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव	२०.००
२५९. श्री रामचन्द्र के उपदेश	२५.००
२६०. धरती हो गई लहुलुहान	३०.००
विविध ग्रन्थ	
२६१. नित्यकर्म विधि तथा भजन कीर्तन	२०.००
२६२. उपनिषद् दीपिका	७०.००
२६३. आर्य समाज के दस नियम	१०.००
२६४. मद्यनिषेध शिक्षित शतकम्	१५.००
२६५. आर्यसमाज क्या है ?	८.००
२६६. जीवन का उद्देश्य	२०.००
२६७. वेदोपदेश	३०.००
२६८. सत्यार्थ प्रकाश का समीक्षात्मक अध्ययन	२०.००
२६९. भगवान् राम और राम–भक्त	२५.००
२७०. जीवन निर्माण	२५.००
२७१. १०० वर्ष जीने के साधन नित्यकर्म	२५.००

२७२. दयानन्द शतक ८.००

२७३. जागृति पुष्प ८.००

२७४. त्यागवाद २५.००

२७५. भस्मान्तं शरीरम् ८.००

२७६. जीवन मृत्यु का चिन्तन २०.००

२७७. ब्रह्मचर्य का वैज्ञानिक स्वरूप १०.००

२७८. कर्म करो महान बनो १४.००

२७९. अष्टाध्यायी सूत्रपाठ ५०.००

२८०. आनन्द बहार शायरी १५.००

२८१. वैदिक वीर गर्जना २५.००

२८२. पर्यावरण विज्ञानम् २०.००

DR. HARISH CHANDRA

283 The Human Nature & Human Food 12.00

284. Vedas & Us 15.00

285. What in the Law of Karma 150.00

286. As Simple as it Get 80.00

287. The Thought for Food 150.00

288. Marriage Family & Love 15.00

289. Enriching the Life 150.00

डॉ. वेदप्रकाश गुप्त

२९०. दयानन्द दर्शन ६०.००

२९१. Philoshophy of Dayanand 150.00

२९२. महर्षि दयानन्द का समाज दर्शन २०.००

---

२९३. आर्य सिद्धान्त और सिख गुरु ६०.००

२९४. आध्यात्मिक चिन्तन के क्षण (आचार्य सत्यजित् जी) ४०.००

२९५. सत्यासत्य निर्णय २५.००

२९६. कलैण्डर–गायत्री मन्त्र, सन्ध्या सुरभि, महर्षि दयानन्द की शिक्षाएँ–प्रत्येक २५.००

२९७. ओ३म् का स्टीकर १०.००

पुस्तक – परिचय

पुस्तक का नाम - गऊ माता विश्व की प्राणदाता

लेखक- स्वामी ज्ञानानन्द जी परिव्राजक

अनुवादक- सम्पादक- श्री राजेन्द्र जिज्ञासु

प्रकाशक- विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८ नई सड़क, दिल्ली–६

मूल्य – ७०=०० **पृष्ठ संख्या** - ११५

गऊ माता का स्थान इस धरा पर सर्वोपरि है। प्राचीन परम्परा से गऊ माता का मान-सम्मान किया जाता है। राजा दिलीप ने २१ दिन तक गौ सेवा का व्रत लेकर नन्दिनी को प्रसन्न किया था। प्राचीन काल में गायों का पालन आश्रमों में ऋषि-महर्षि किया करते थे। गऊ माता के शरीर के प्रत्येक अङ्ग का मरने के बाद भी महत्त्व है। गाय से दूध, दूध से घृत, मक्खन, दही, छाछ आदि पेय पदार्थ प्राप्त होते हैं। गाय के गोबर से खाद व ईंधन मिलता है। गाय का बछड़ा बैल बनकर खेती में काम आता रहा है। गाय की दिनचर्या से पर्यावरण शुद्ध होता है।

आज के युग में गाय की हत्या की जा रही है, मांस-भक्षी उसे मारकर सेवन करते हैं। स्वार्थी लोग गाय को अपनी क्षुधा शांति के लिए आहार बना रहे हैं, जबकि गाय सर्वत्र सभी समाज में पूजनीय मानी गई है। किसी भी धर्म में गाय को मारना स्वीकार नहीं किया गया है। स्वामी जी ने गऊ की महिमा, विदेशी तथा मुस्लिम विद्वानों की धारणा, प्राचीन-अर्वाचीन समय में गऊओं की संख्या, दयनीय स्थिति, उनके सुधार के उपाय, धार्मिक दृष्टिकोण, स्वास्थ्य लाभ, आर्थिक दृष्टिकोण, विदेशों में गोपालन व रक्षा, विदेशी गऊ शालाओं से भारतीय गऊ शालाओं की तुलना, डॉक्टरों का दृष्टिकोण, वैज्ञानिक अनुसंधान, पाणिनी गुरुकुल द्वारा गौ शोध, इतिहास तथा विज्ञान की साक्षी आदि मुख्य बिन्दुओं पर महत्त्वपूर्ण, जीवनोपयोगी एवं हितकारी विचारों को लेखक ने सारगर्भित परिचयात्मक रूप प्रदान किया है। यह लेखक की भावना का उदात्त स्वरूप है। पाठक इसे हृदयङ्गम के कर गौ की सेवा तथा अन्य लाभों से परिचित होकर अनुपम व्रत से जुड़ेंगे। लेखक को प्रस्तुत सामग्री के लिए साधुवाद। गागर में सागर कहावत सही चरितार्थ होती है। यह कृति आज के युग के लिए अनुपम कर्त्तव्य व गौ सेवा के लिए प्रेरणादायी है।

– देवमुनि, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर।

दोस्त हो तो ऐसा

-धर्मेन्द्र गौड़

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस और शौत्तेन्द्रो कुमार घोष बचपन में सहपाठी थे। वे कलकत्ता के स्कॉटिश चर्च स्कूल में पढ़ते थे। फिर स्कॉटिश चर्च कॉलेज में पढ़े थे, एक साथ। सुभाष बोस रहते थे एलगिन रोड पर अपनी आलीशान दो मंजिली कोठी में और शौत्तेन्द्रो घोष भवानीपुर मोहल्ले में रॉय स्ट्रीट पर दो नम्बर बँगले में। दोनों के घर पास-पास थे। घोष रग्बी और फुटबाल के कैप्टेन थे। सुभाष और उनके बड़े भाई शरत अपने पड़ोसी के खेल पर जी-जान से फिदा थे।

पढ़ाई-लिखाई खत्म होने पर सुभाष और शौत्तेन्द्रो दोनों आई.सी.एस. (इण्डियन सिविल सर्विस) के इम्तहान में बैठे। दोनों अच्छे नम्बरों से पास हुए और ट्रेनिंग के लिए इंग्लैण्ड भेजे गए। विदेश में सुभाष को भारत और भारतवासियों को गुलाम बनाए रखने वाला अंग्रेजों का रवैया भाया नहीं। वे तो बस स्वतन्त्र भारत की ही तस्वीर साकार होते देखना चाहते थे। आई.सी.एस. की नौकरी का चक्कर छोड़छाड़ सीधे लौटे भारत और अपने प्यारे, मगर गुलाम देश की आजादी के लिए राजनीति में कूद पड़े। सुभाष ने युगों से सोई हुई जनता को जगाने के कठिन कार्य का संकल्प लिया।

शौत्तेन्द्रो और सुभाष का सम्पर्क पूरी तरह टूट चुका था, लेकिन जब भी शौत्तेन्द्रो अखबारों की सुर्खियों में अपने सुभाष की उपलब्धियों, बुलन्दियों और भारतीय और भारतीय जन-मानस पर उनका अमिट प्रभाव देखते-पढ़ते, तो उनका हृदय आनन्द से खिल उठता था और वे उनके प्रति नतमस्तक हुए बिना न रहते थे।

अब इस समय भीषण युद्ध के दौरान शौत्तेन्द्रो को अपने बर्मी एजेंटों द्वारा नेताजी सुभाष के बारे में उपयुक्त जानकारियाँ मिल रही थीं। उन्होंने अपने एक खास एजेंट के जरिए नेताजी के पास खबर भिजवाई कि उनका और उनकी आजाद हिन्द फौज का भारत भूमि पर अभूतपूर्व स्वागत है, यदि वे कोहिमा की ओर से दाखिल हों। चटगाँव की तरफ भूलकर भी कदम न बढ़ायें। वहाँ चप्पे-चप्पे पर दुश्मन उनकी घात में बैठे हैं। मैं नहीं चाहता कि मेरे गोरिल्लों द्वारा आजाद हिन्द फौज के नौनिहाल देशभक्तों का सफाया हो। तब तो भारत की स्वाधीनता की रही-सही आशा भी धूल में मिल जाएगी।

यह राष्ट्रप्रेम भरा सन्देश पाकर नेताजी के नेत्र सजल हो गए। उन्हें बचपन की सभी पुरानी बातें याद आईं। उन्हें अपने बालसखा पर पूरा भरोसा था। वे उसकी बात मान गए।

१८ मार्च, १९४४ को आजाद हिन्द फौज के बाँके जवान मारते-काटते, सड़कें तोड़ते, पुल उड़ाते, कोहिमा और मणिपुर तक आगे बढ़ आए और १४ अप्रैल, १९४४ को नेताजी ने स्वयं अपने ही हाथों मोइरंग में भारत-भूमि पर राष्ट्रीय झण्डा फहराया। लगातार दो महीनों तक घास खाकर, पत्ते चबाकर, नदी-नालों का जल पीकर जूझे थे भारतीय वीर।

इस घटना से पहले अराकान युद्ध ने और भी भंयकर रूप धारण कर लिया था। जाँबाज जापानी अपनी जान पर खेल रहे थे। अंग्रेज बौखला गए और फरवरी, १९४४ में रिजर्व में रखी अपनी २६ वीं और ७० वीं डिवीजनें भी लड़ाई के मैदान में झोंक दीं। लिबरेटर चर्चिल, वेलिंग्टन, ब्लेनहेम्स, वल्टीवेंजनेंस बमवर्षकों से अंधाधुंध बमबारी करके जापानियों की युद्ध-सामग्री ले जाने वाले सभी थल और जल-मार्ग रोक दिए। 'फोर्स-१३६' एजेंटों ने, जिनमें घोष के गोरिल्ले भी शामिल थे, उनकी रेलों और सड़कों को काम आने लायक नहीं रखा। यही कारण था कि अधिकांश जापानी सैनिकों को बैंकॉक से इम्फाल तक पन्द्रह सौ किलोमीटर की दूरी पैदल ही तय करनी पड़ी। हमने उनकी रेलों और मोटरगाड़ियों का तो दौड़ना बन्द कर दिया था, लेकिन हमारा शक्तिशाली रॉयल एयर फोर्स जापानी सैनिकों को यह असम्भव दूरी पैदल तय करने से न रोक पाया।

गले में लटकते केवल मुट्ठी भर चावल के दानों के सहारे ही वे जूझ रहे थे। उनकी युद्ध-सामग्री समाप्त हो चुकी थी। घोष के एजेंटों ने उनकी सप्लाई लाइन काटकर उनकी रसद का आना ही बन्द कर दिया था। उनकी दिलेरी सचमुच ऊँची थी-बहुत ऊँची। सैकड़ों तो भूख-प्यास और घुटन से ही तड़प-तड़पकर मर गए और हजारों

ने अपनी पेटी से लटककर 'हाराकिरी' कर ली। आत्मसमर्पण से मृत्यु उन्हें कहीं सम्मानजनक और प्रिय थी। अराकान युद्ध जैसी विभीषिका शायद ही इतिहास के पन्नों में देखने को मिले।

मुस्लिम लीगी नेता हसन शहीद सोहरावर्दी, घोष से दुश्मनी रखने लगा। इसकी खास वजह थी कि जब घोष युद्ध रेखा के पीछे होते, तो सोहरावर्दी घोष के शरणार्थी शिविरों में जाकर राजनीतिक भाषण देता और मुसलमानों के बीच हिन्दुओं के प्रति घृणा के बीज बोता। इस प्रकार वह वहाँ के मुसलमानों पर अपना सिक्का जमाना चाहता था। घोष ने इस बात पर एतराज किया। सरकार को भी आगाह कर दिया कि भारत-विभाजन के बीज बोए जा रहे हैं। फिर बंगाल प्रान्त के मुस्लिम लीगी नेताओं को चेतावनी भी दे दी कि वे भूलकर भी उसके शरणार्थी शिविरों में कदम न रखें, मगर सोहरावर्दी को इस बात की कहाँ परवाह? उसके कंधे पर तो अंग्रेजों का हाथ था। वह घोष के शरणार्थी कैम्पों में बिना उनकी पूर्व अनुमति के ही दाखिल होने लगा। ऐसे ही एक मौके पर घोष की गैरहाजिरी में उन्हीं के आदेश से सोहरावर्दी और उसके साथियों को मामूली घुसपैठियों की तरह पकड़ लिया गया। फिर घोष के आने पर ही सबको छोड़ा गया, इस चेतावनी के साथ कि भविष्य में फिर यहाँ आने की जुर्रत न करें। सोहरावर्दी इस बात को कभी भूला नहीं और घोष को मटियामेट करने की तदबीरें भिड़ाने लगा।

आर.बी.लैंगडन के माध्यम से फोर्स-१३६ घोष को बहुत ही अच्छा पारिश्रमिक देता था। लैंगडन असम में कई चाय बागानों के मालिक थे। वे घोष के पुराने मित्र भी थे। लैंगडन इस धनराशि का एक बड़ा भाग घोष के सालिसीटर-फाउलर एण्ड कंम्पनी के मालिक हैरी फाउलर के पास जमा कर दिया करते थे। यह सब सर गाल्विन स्टुअर्ट की सिफारिश पर ही किया गया था। घोष ने फाउलर से इतना अलबत्ता कहा था कि इस रकम को अच्छे से अच्छे काम में लगाया जाए। फाउलर ने घोष के लिए कलकत्ता में बिल्डिंगें खरीदनी शुरू कर दीं।

अपनी बेहतरीन कारगुजारी के फलस्वरूप सन् १९४५ के शुरू में घोष की महत्ता काफी बढ़ गई थी और लड़ाई खत्म होने पर घोष को दी गई ताकत, रुतबा, धन-दौलत देखकर अंग्रेज चौंके । घोष हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने पहाड़ी आदिवासियों को जापान के खिलाफ करने में जबरदस्त कामयाबी हासिल की थी। यह काम था भी उन्हीं के बस का। सर गाल्विन स्टुअर्ट और सर कॉलिन मिकेन्जी घबरा गए कि कहीं घोष इन्हीं आदिवासियों को हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए आगे खड़ा न कर दें, जिससे उनका बंगाल-विभाजन का ख्वाब हमेशा के लिए मिट्टी में मिल जायेगा। 'फोर्स-१३६' बंगाल-विभाजन के पक्ष में था और घोष उसके बेहद खिलाफ। बंगाल पर जापानी कब्जा भी नहीं हो पाया। अंग्रेजों का घोष से मतलब भी निकल चुका था। फिर तो घोष को मिटा डालने का फैसला आनन-फानन में कर लिया गया। फैसला करने वालों में थे- सर गाल्विन स्टुअर्ट, जनरल सर गिफर्ड और हसन शहीद सोहरावर्दी "जो बाद में अविभाजित बंगाल का मुख्यमंत्री बना" खान बहादुर ई.ए.रे. और उनके साथी।

'फोर्स-१३६' ने धन और रुतबे का लालच देकर कुछ लोग तैयार किए। उन्होंने झूठे-सच्चे इल्जाम लगाकर घोष के खिलाफ उलटी-सीधी शिकायतें जड़ीं। लाखों सरकारी रुपयों की फिजूलखर्ची और गोलमाल के जुर्म में घोष को दण्ड का भागी बनाया गया। सामने से घोष की मुखालफत करने वाले प्रमुख व्यक्ति थे- इण्डियन मेडिकल सर्विस के मेजर फिच (इन्हीं हजरत ने मेजर ड्रेक बोजमैन और सर जफरुल्ला खाँ के सहयोग से भारत में हिन्दू-मुस्लिम दंगों और देश-विभाजन की रूपरेखा तैयार की थी, जिसे 'पोस्ट क्विट प्लान' के नाम से जाना गया), चटगाँव-ढाका के कमिश्नर मिस्टर जेमिसन। फिर अन्त में तो बर्मा के लिए अमरीकी और चीनी फौजों को छोड़कर ब्रिटिश लैण्ड फोर्सेज के कमाण्डर इन-चीफ जनरल सर जॉर्ज गिफर्ड, जी.सी.बी., डी.एस.ओ., ए.डी.सी. तक इस घिनौने काम पर उतर आए।

इस साजिश को कार्यान्वित करने के लिए ब्रिटिश सरकार ने खास तौर पर सन् १९४४ का ऑर्डिनेंस ३८-ओ.एस. ५३/१९४४ पास किया- केवल घोष को सताने और उन्हें जलील करने के लिए। घोष की जमीन-जायदाद, शेयर, बीमे आदि जब्त कर उन्हें कटघरे में ला खड़ा किया। घोष की समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर वे करें भी तो क्या? सीधे पहुँचे सर गाल्विन स्टुअर्ट के पास। उन्होंने भी ठेंगा दिखा दिया और बोले, "आपको भर्ती

करते समय ही पूरी तरह से आगाह कर दिया गया था कि अगर जाल में फँसते हो, तो खुद ही निकलना होगा। आपकी सहायता करने का मतलब ही है 'फोर्स-१३६' जैसी ब्रिटिश गुप्तचर संस्था को बेनकाब करना, जो हम किसी भी कीमत पर नहीं कर सकते।'' घोष ऐसे डूबे कि कहीं के न रहे। अराकान युद्ध की सफलता में उनका कितना महत्त्वपूर्ण योगदान रहा, यह भूलने में अंग्रेजों को तनिक देर न लगी।

स्टुअर्ट ने सच ही कहा था। घोष भी जानते थे कि दुश्मन द्वारा पकड़े जाने पर असह्य यातनाएँ सहने पर और मौत के मुँह में जाने पर भी 'फोर्स-१३६' उनकी सहायता करके अपने आपको बेनकाब कभी नहीं करेगा।

तभी घोष को पता चला कि उनके पुराने मित्र और 'फोर्स-१३६' के साथी आर.बी. लैगडन, जो उन दिनों इंग्लैण्ड में थे, घोष की तरफ से अदालत के रूबरू गवाही देने भारत आ रहे हैं। लैगडन को पूरी जानकारी थी कि यह पैसा कहाँ से और कितना आता था और वे ही इसे घोष को देते भी थे। घोष की खुशी का ठिकाना न रहा, लेकिन उनके भाग्य में तो कुछ और भी बदा था। 'फोर्स-१३६' को लैगडन के आने की सूचना मिल गई, अत: भारत आते समय कराची में ही उनके यान का 'एयर क्रैश' हो गया, ऐसी खबर कुछ अखबारों में छपा दी गई। मगर हकीकत यह थी कि कराची में ही 'फोर्स-१३६' के एजेंटों ने गोली मार कर उनकी हत्या कर दी।

जिस समय कलकत्ता में घोष के मुकद्दमे की सुनवाई हो रही थी, लीगी नेता हसन शहीद सोहरावर्दी बंगाल सरकार का पहला मुख्यमन्त्री था। ब्रिटिश सरकार द्वारा घोष पर दायर किया गया यह मुकद्दमा कलकत्ता और दिल्ली की अदालतों में दस वर्षों से कुछ अधिक समय तक चला। विद्वान न्यायाधीशों ने घोष का 'फोर्स-१३६' जैसी ब्रिटिश गुप्तचर संस्था से सम्बद्ध होना माना ही नहीं। बर्मा शरणार्थी शिविरों का भी पूरा हिसाब-किताब सही निकला। कहीं कोई गड़बड़ी नहीं। फिर भी घोष को सजा मिली। सम्भवत: भारतीय न्यायालय के इतिहास में यह सबसे गहरा काला धब्बा है। कानूनी दाँव-पेच में असलियत किस प्रकार दबा दी गई, यह भी इसी केस में उजागर हुआ। इस मामले से यह तो साबित हो ही गया कि भारत छोड़ने के बाद भी इस देश में अंग्रेजों की जड़ें कितनी गहरी हैं।

१५ सितम्बर,१९४७ को अदालत में दाखिल किए गए अपने लिखित बयान में घोष ने 'फोर्स-१३६' में अपने गुप्त क्रियाकलापों का हवाला देते हुए ब्रिटिश सेना के कमाण्डरों की गतिविधियों और लड़ाई में जापानियों के दाँव-पेच का भी इजहार किया था। चार वर्षों बाद सन् १९५१ में ब्रिटिश सरकार ने दक्षिण-पूर्व एशिया कमाण्ड के सुप्रीम अलाइड कमाण्डर अर्ल माउण्टबैटन ऑफ बर्मा की रिपोर्ट प्रकाशित की थी। कहा जाता है कि उसमें भी वही सब बातें लिखी थीं, जो चार वर्ष पूर्व घोष ने अदालत के समक्ष अपने लिखित बयान में कही थीं। फिर घोष के साथ यह अन्याय हुआ ही क्यों?

अराकान-युद्ध में घोष का योगदान इतिहास के पन्नों में स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा। जिस क्षेत्र में ब्रिटिश साम्राज्य के दो-दो फील्ड मार्शलों को जापानियों ने धूल चटा दी थी, वहीं घोष और उनके एजेंट दुश्मन को लगातार ग्यारह महीनों तक बीहड़ जंगलों में फँसाए रहे और कमाल यह कि ब्रिटिश फौज उनसे सैकड़ों मील दूर रही। अराकान-युद्ध की जीत का पूरा-पूरा श्रेय घोष और उनके चतुर जासूसों को है।

इण्डियन सिविल सर्विस के शौतेन्द्रो कुमार घोष जैसे विद्वान् विशेष सूझबूझ वाले अफसर से केवल एक ही बार भेंट हुई थी, जुलाई, १९४३ में। स्टुअर्ट ने एक निहायत जरूरी पार्सल उनके हवाले करने उनकी कोठी पर भेजा था। क्या था उसमें, यह तो मुझे आज तक मालूम न हो सका। ऐसी सुरक्षा बरती जाती थी 'फोर्स-१३६' में, किन्तु थी अवश्य ही कोई अति महत्त्वपूर्ण वजनी चीज, वरना मेरे जरिए कभी न भेजी जाती। उस दिन काफी देर तक गुप्तचरी-प्रतिगुप्तचरी के अचूक दाँव-पेचों पर उनसे विचार-विमर्श हुआ था।

इस भेंट के बाद उन्होंने बहुत कोशिश की थी मुझे अपने स्टाफ में लेने की, लेकिन लॉर्ड जॉन लिनार्ड कॉली को तो मुझसे कुछ और ही काम लेने थे, अत: वे राजी न हुए। ऐसे दबंग अफसर की याद आज ५५ वर्षों बाद भी आ ही जाती है। अब तो वे इस संसार में भी नहीं हैं। उनका देहान्त सितम्बर,१९७५ में हुआ था। यह बात मुझे २६ जनवरी, १९८२ को ही ज्ञात हुई। ऐसे उच्चकोटि के 'मास्टर-स्पाई' को मेरे शत-शत नमन!

अध्यात्मवाद

- कृष्णचन्द्र गर्ग

आत्मा क्या है, परमात्मा क्या है, इन दोनों का आपस में सम्बन्ध क्या है- इस विषय का नाम अध्यात्मवाद है। आत्मा और परमात्मा दोनों ही भौतिक पदार्थ नहीं हैं। इन्हें आँख से देखा नहीं जा सकता, कान से सुना नहीं जा सकता, नाक से सूँघा नहीं जा सकता, जिह्वा से चखा नहीं जा सकता, त्वचा से छुआ नहीं जा सकता।

परमात्मा एक है, अनेक नहीं। ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि उसी एक ईश्वर के नाम हैं। (एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति। ऋग्वेद - १-१६४-४६) अर्थात् एक ही परमात्मा शक्ति को विद्वान लोग अनेक नामों से पुकारते हैं। संसार में जीवधारी प्राणी अनन्त हैं, इसलिए आत्माएँ भी अनन्त हैं। न्यायदर्शन के अनुसार ज्ञान, प्रयत्न, इच्छा, द्वेष, सुख, दुःख- ये छः गुण जिसमें हैं, उसमें आत्मा है। ज्ञान और प्रयत्न आत्मा के स्वाभाविक गुण हैं, बाकी चार गुण इसमें शरीर के मेल से आते हैं। आत्मा की उपस्थिति के कारण ही यह शरीर प्रकाशित है, नहीं तो मुर्दा अप्रकाशित और अपवित्र है। यह संसार भी परमात्मा की विद्यमानता के कारण ही प्रकाशित है।

आत्मा और परमात्मा-दोनों ही अजन्मा व अनन्त हैं। ये न कभी पैदा होते हैं और न ही कभी मरते हैं, ये सदा रहते हैं। इनका बनाने वाला कोई नहीं है। आत्मा परमात्मा का अंश नहीं है। हर आत्मा एक अलग और स्वतन्त्र सत्ता है।

आत्मा अणु है, बेहद छोटी है। परमात्मा आकाश की तरह सर्वव्यापक है। आत्मा का ज्ञान सीमित है, थोड़ा है। परमात्मा सर्वज्ञ है, वह सब कुछ जानता है। जो कुछ हो चुका है और हो रहा है, सब कुछ उसके संज्ञान में है। अन्तर्यामी होने से वह सभी के मनों में क्या है- यह भी जानता है। आत्मा की शक्ति सीमित है, थोड़ी है, परन्तु परमात्मा सर्वशक्तिमान है। सृष्टि को बनाना, चलाना, प्रलय करना- आदि अपने सभी काम करने में वह समर्थ है। पीर, पैगम्बर, अवतार आदि नाम से कोई एजेंट या बिचौलिए उसने नहीं रखे हैं। ईश्वर सभी काम अपने अन्दर से करता है, क्योंकि उसके बाहर कुछ भी नहीं है। ईश्वर जो भी करता है, वह हाथ-पैर आदि से नहीं करता, क्योंकि उसके ये अंग हैं ही नहीं। वह सब कुछ इच्छा मात्र से करता है।

ईश्वर आनन्द स्वरूप है। वह सदा एक रस आनन्द में रहता है। वह किसी से राग-द्वेष नहीं करता। वह काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार से परे है। ईश्वर की उपासना करने से अर्थात् उसके समीप जाने से आनन्द प्राप्त होता है, जैसे सर्दी में आग के पास जाने से सुख मिलता है। ईश्वर निराकार है। उसे शुद्ध मन से जाना जा सकता है, जैसे हम सुख-दुःख मन में अनुभव करते हैं।

यह आत्मा जब मनुष्य शरीर में होती है, तब वह कार्य करने में स्वतन्त्र रहती है। उस समय किए कार्यों के अनुसार ही उसे परमात्मा सुख, दुःख तथा अगला जन्म देता है। दूसरी योनियाँ या तो किसी दूसरे के आदेश पर चलती हैं या स्वभाव से काम करती हैं। उनमें विचार शक्ति नहीं होती, इसलिए उन योनियों में की गई क्रियाओं का उन्हें अच्छा या बुरा फल नहीं मिलता। वे केवल भोग योनियाँ हैं जो पहले किए कर्मों का फल भोग रही हैं। मनुष्य योनि में कर्म और भोग दोनों का मिश्रण है। मनुष्य स्वतन्त्र रूप से कर्म भी करता है और कर्म फल भी भोगता है।

मैं आत्मा हूँ, शरीर नहीं हूँ। शरीर मेरा संसार में व्यवहार करने का साधन है। कर्ता और भोक्ता आत्मा है। सुख-दुःख आत्मा को होता है।

जीवात्मा न स्त्रीलिंग है, न पुलिंग है और न ही नपुंसक है। यह जैसा शरीर पाता है, वैसा कहा जाता है। (श्वेताश्वतर उपनिषद्)

ईश्वर की पूजा ऐसे नहीं की जाती, जैसे मनुष्यों की पूजा अर्थात् सेवा सत्कार किया जाता है। ईश्वर की आज्ञा का पालन अर्थात् सत्य और न्याय का आचरण- यही ईश्वर की पूजा है।

कठोपनिषद् में मनुष्य-शरीर की तुलना घोड़ा गाड़ी से की गई है। इसमें आत्मा गाड़ी का मालिक अर्थात् सवार है। बुद्धि सारथी अर्थात् कोचवान है, मन लगाम है, इन्द्रियाँ घोड़े हैं। इन्द्रियों के विषय वे मार्ग हैं, जिन पर इन्द्रियाँ रूपी घोड़े दौड़ते हैं। आत्मा रूपी सवार अपने लक्ष्य तक तभी पहुँचेगा, जब बुद्धि रूपी सारथी मन रूपी लगाम को अपने वश में रखकर इन्द्रियाँ रूपी घोड़ों को सन्मार्ग पर चलाएगा।

उपनिषद् में घोड़ा गाड़ी को रथ कहा जाता है और रथ पर सवार को रथी। मनुष्य शरीर में आत्मा रथी है। जब आत्मा निकल जाती है, तब शरीर अरथी रह जाता है।

परमात्मा हम सबका माता, पिता और मित्र है। हम सब प्राणियों का भला चाहता है। जब मनुष्य कोई अच्छा काम करने लगता है तो उसे आनन्द, उत्साह, निर्भयता महसूस होती है। वह परमात्मा की तरफ से होता है, और जब वह कोई बुरा काम करने लगता है, तब उसे भय, शंका, लज्जा महसूस होती है। वह भी परमात्मा की तरफ से ही होता है।

- ८३१ सैक्टर १०, पंचकूला, हरियाणा।
दूरभाषः ०९५०१४-६७४५६

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रात: एवं सायं दैनिक यज्ञ- प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***- आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति नि:शुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***- अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था नि:शुल्क की जाती है। ***गोशाला***- गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का नि:शुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***- वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा नि:शुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***- इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ नि:शुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***- योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में नि:शुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अत: आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता

(१६ से ३० दिसम्बर २०१५ तक)

१. श्री रजनीश कपूर, नई दिल्ली २. श्री नवीन मिश्रा, अजमेर ३. श्री राजन हांडा, दिल्ली ४. श्रीमती सरोज शर्मा, अजमेर ५. श्री आनन्द अग्रवाल, फरीदाबाद, हरियाणा ६. श्री प्रभुलाल कुमावत, अजमेर ७. श्री बलवीर सिंह बत्रा, अजमेर ८. आजंना पी.एम.ए. सर्विसेज, चित्तौड़गढ, राज. ९. श्री रूद्रकुमार वर्मा, अलवर, राज. १०. मैसर्स डॉलर फाऊन्डेशन, कोलकाता ११. स्वस्तिकाम: चैरिटेबल ट्रस्ट, अमरावती, महा. १२. श्रीमती ऋचा शेखर, बेंगलौर १३. श्री जेठमल कालूराम, ब्यावर, राज. १४. श्री राजीव सिंह, दिल्ली १५. श्री असीम रावत, गाजियाबाद, उ.प्र. १६. श्रीमती पुष्पा गोसाई, देहरादून १७. श्रीमती सुशीला शर्मा, अजमेर १८. श्रीमती अनिता आर्या, नई दिल्ली १९. श्री कार्तिक कुमार, दिल्ली २०. श्री अखिलेश/श्री अनुराग/श्री अनशुमन, सुन्दर नगर, हिमाचल प्रदेश २१. श्री योगमुनि, धुले, महाराष्ट्र।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में नि:शुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चैक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१६ से ३० दिसम्बर २०१५ तक)

१. श्री ई.एस. वाणी, विज्ञानग्राम, आन्ध्रप्रदेश २. श्री ऋषभ गुप्ता, अम्बाला कैन्ट, पंजाब ३. श्री सी.एल. भण्डारी, ठाणे, महाराष्ट्र ४. श्री योगेश शारदा, पश्चिम मुम्बई, महाराष्ट्र ५. श्रीमती प्रेमलता शर्मा, मुम्बई, महाराष्ट्र ६. डॉ. अर्पित/डॉ. नेहा, अहमदाबाद, गुजरात ७. श्री पुरषोत्तमलाल आर्य, दिल्ली ८. श्री बलवीर सिंह बत्रा, अजमेर ९. श्रीमती प्रेमलता शर्मा, अजमेर १०. श्री संजय नागरानी, अजमेर ११. श्री रूद्रकुमार वर्मा, अलवर, राज. १२. श्री राघवेन्द्र राव, विजयवाड़ा, आन्ध्रप्रदेश १३. श्री राजीव सिंह, दिल्ली १४. श्री कृष्ण सिंह राठी, हरियाणा १५. श्री रामचन्द्र, रोहतक, हरियाणा १६. डॉ. उत्तपल कँवर, गोहाटी, असम १७. श्री चन्द्रसेन हरिसिंघानी, अहमदाबाद, गुजरात १८. श्रीमती अनिता आर्या, नई दिल्ली १९. श्री हरिन्दर यादव, नई दिल्ली २०. श्री अरुण कुमार, नई दिल्ली २१. श्री वीरेन्द्र सिंह हुड्डा, नोएडा, उ.प्र.।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं वैसे ही जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४१

विद्वान् स्त्रियों को योग्य है कि अच्छी परीक्षा किए हुए पदार्थ को जैसे आप खायें वैसे ही अपने पति को भी खिलावें कि जिससे बुद्धि, बल और विद्या की वृद्धि हो और धनादि पदार्थों को भी बढ़ाती रहे।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४२

जो खोटे काम करने वाला पुरुष अनेक प्रकार से अपने बल को उन्नति देकर सबको दु:ख देना चाहे, उसको राजा सब प्रकार से दण्ड दे। तो भी वह अपनी अन्यन्त खोटाइयों को न छोड़े तो उसको मार डाले अथवा नगर से इसको दूर निकाल बन्द रखे।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४४

जिज्ञासा समाधान - १०३

- आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा- मेरी जिज्ञासा निम्नलिखित है। कृपया प्रमाण द्वारा समाधान करने का कष्ट करें-

१. क्या नाम व शब्द सृष्टि के साथ पैदा हुए हैं? (जैसे पृथ्वी, आकाश, पानी, इन्द्रियों के नाम या पदार्थों के व वनस्पतियों के नाम)

२. क्या यम-नियम का पालन करने वाले व धार्मिक सेवा कार्य में लगे हुए व्यक्ति को मुक्ति मिलेगी?

३. क्या वैदिक धर्म के मानने वाले शास्त्रों के अलावा दूसरे धर्म शास्त्रों को मानने वाले को भी मुक्ति मिलेगी?

- प्रणव मुनि, जयपुर, राज.

समाधान- १. (क) सृष्टि का रचने वाला परमेश्वर है, उसी ने संसार के समस्त पदार्थ रचे हैं। परमात्मा ने जितने भी पदार्थ रचे हैं, उनके नाम पहले से ही परमात्मा के ज्ञान में सदा बने रहते हैं। जब रचना करता है तो उनका नामकरण भी परमात्मा करता है, अर्थात् जो पदार्थ उत्पन्न होता है, उसका नाम भी साथ-साथ होता चला जाता है। सृष्टि में जो भी पदार्थ हैं, उन सबके नाम उनकी उत्पत्ति के साथ ही साथ हैं। इस विषय में महर्षि मनु लिखते हैं-

सर्वेषां तु नामानि कर्माणि च पृथक्-पृथक्।
वेदशब्देभ्य एवाऽऽदौ पृथक्संस्थाश्च निर्ममे।। १.२१

उस परमात्मा ने सब पदार्थों के नाम पृथिवी, सूर्य, गो, अश्व और मनुष्यादि और इनके भिन्न-भिन्न कर्म- जैसे ब्राह्मण का वेदाध्ययन, अध्यापनादि, क्षत्रिय का रक्षा करना आदि, वैश्य का व्यापारादि अथवा मनुष्य तथा अन्य प्राणियों के हिंस्र, अहिंस्र आदि कर्म उसी परमात्मा ने निश्चित किये हैं। सबकी भिन्न-भिन्न व्यवस्था सृष्टि के आदि में परमेश्वर ने वेदों के शब्द से ही बनायी, अर्थात् मन्त्रों के द्वारा यह ज्ञान दिया।

इसलिए जो भी संसार में है, उसका नाम व काम परमेश्वर द्वारा नियत किया हुआ है।

(ख) मुक्ति के लिए मनुष्य यम-नियम का पालन करते हुए धार्मिक कार्य करे, इससे उसके अच्छे संस्कार बनेंगे। मुक्ति के लिए रास्ता तो खुलेगा, किन्तु केवल इतने मात्र से मुक्ति नहीं होगी। मुक्ति के लिए महर्षि ने कहा है, "पवित्र कर्म, पवित्रोपासना और पवित्र ज्ञान ही से मुक्ति......."। स.प्र. ९

यहाँ प्रमाण देने का तात्पर्य यह है कि केवल यम-नियम अनुष्ठान और धार्मिक सेवाकार्य से मुक्ति नहीं होगी। इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि धार्मिक सेवा कार्य आदि मुक्ति में बाधक हैं।

यम-नियम के अनुष्ठान और धार्मिक सेवा कार्य से व्यक्ति के अन्तःकरण में श्रेष्ठ संस्कार पड़ते हैं, जिससे व्यक्ति का उपासना में मन लगता है और उससे ज्ञान ग्रहण करने की योग्यता बढ़ती है। जैसा जिसका जितना शुद्ध ज्ञान होगा, वह वैसा उतना अपने अविद्या के संस्कारों को नष्ट करेगा। जब पूर्ण रूप से अविद्या के संस्कार नष्ट हो जाते हैं, तब मुक्ति की अवस्था आती है। मुक्ति न तो कर्म से होती और न ही उपासना से, मुक्ति तो ज्ञान से ही सम्भव है। महर्षि कपिल ने अपने शास्त्र में लिखा- "**ज्ञानात् मुक्तिः**।।" जीवात्मा की मुक्ति ज्ञान से होती है। "**बन्धो विपर्ययात**।।" अज्ञान से बन्धन होता है। "**नियतकारणत्वान्न समुच्चयविकल्पा** " मुक्ति प्राप्ति में ज्ञान की नियतकारणता है, अनिवार्य कारणता है, अर्थात् मुक्ति प्राप्ति में ज्ञान ही निश्चित कारण है। इसलिए न तो ज्ञान के साथ अन्य साधन मिलकर मुक्ति देते हैं और न ही ऐसा है कि ज्ञान से भी मुक्ति हो सकती है अथवा शुद्ध कर्म व उपासना से भी। मुक्ति के लिए तो केवल ज्ञान ही साधन बनता है, अन्य नहीं।

इसका कोई यह अर्थ न निकाले कि कर्म और उपासना की कोई महत्ता ही नहीं है, क्योंकि मुक्ति के लिए तो ज्ञान की ही आवश्यकता है। कर्म और उपासना का अपना महत्त्व है। शुद्ध कर्म और शुद्ध उपासना के करने से व्यक्ति के अन्दर सात्विक भाव उत्पन्न होते हैं। इस सात्विक स्थिति में ही व्यक्ति शुद्ध ज्ञान को ग्रहण करता चला जाता है। शुद्ध ज्ञान के होने पर अविद्या के संस्कार ढीले होने लगते हैं। धीरे-धीरे शुद्ध ज्ञान से साधक अपने अविद्यादि

क्लेशों को पूर्ण रूप से नष्ट कर देता है। जब अविद्यादि क्लेश पूर्ण रूप से नष्ट हो जाते हैं, तब साधक की मुक्ति सम्भव हो जाती है।

इसलिए केवल यम-नियम का पालन करने अथवा धार्मिक सेवा कार्य करने से मुक्ति मिल जायेगी-ऐसा नहीं है। यम-नियम का पालन और धार्मिक सेवा कार्य का अपना एक फल है और वह अच्छा ही फल होगा, किन्तु इनका फल मुक्ति नहीं है। ये सब करते हुए योगाभ्यास करें और ज्ञान प्राप्त कर मुक्त हो जायें।

(ग) इस बिन्दु 'ग' का उत्तर देने से पहले आपको बता दें कि अभी ऊपर हमने लिखा-मुक्ति ज्ञान से होती है और शुद्ध ज्ञान का भण्डार वेद व वेदानुकूल शास्त्र हैं। इनके अतिरिक्त जितने भी मतवादियों ने अपने-अपने ग्रन्थ बना रखे हैं, उनमें पूर्ण सत्य नहीं है और जो सत्य है भी, वह वेदादि का ही है। अन्य मतवादियों के ग्रन्थों में सृष्टि विरुद्ध बातें प्रचुर मात्रा में हैं, पाखण्ड और अन्धविश्वास से पूर्ण बातें उनके ग्रन्थों में हैं। इस प्रकार की बातों से युक्त ग्रन्थों को मानने वाली मुक्ति कैसे हो सकती है, यह आप भी विचार कर देखें।

इसलिए वैदिक धर्म के मानने वाले शास्त्रों के अतिरिक्त अन्य मतवादियों के ग्रन्थों को मानने वालों की मुक्ति सम्भव नहीं है। महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के पठन-पाठन विषय में स्पष्ट लिखा कि-

यो मनुष्यो वेदार्थान्न वेत्ति स नैव तं बृहन्तं
परमेश्वरं धर्मं विद्यासमूहं वा वेत्तुमर्हति।
कुतः सर्वासां विद्यानां वेद एवाधिकरणमस्त्यतः।
न हि तमविज्ञाय कस्यचित् सत्य विद्या प्राप्तिभवितुर्महति।।

यहाँ महर्षि का कहने का भाव है कि जो मनुष्य वेदार्थ को नहीं जानता, वह कभी उस महान् परमेश्वर, धर्म और विद्या समूह को जानने में समर्थ नहीं हो सकता, क्योंकि सभी सत्य विद्याओं का वेद ही आधार है, इसलिए उस वेद को जाने बिना किसी को सत्यविद्या प्राप्त नहीं हो सकती।

-ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर।

............जागरण की बात कर लें।

- रामनिवास गुणग्राहक

आ तनिक उठ बैठ अब कुछ जागरण की बात कर लें।
अथक रहकर लक्ष्य पा ले, उस चरण की बात कर लें।।
जगत् में जीने की चाहत, मृत्यु से डरती रही है।
जिन्दगी की बेल यूँ, पल-पल यहाँ मरती रही है।।
प्राण पाता जगत् जिससे, उस मरण की बात करे लें-
अथक रह कर लक्ष्य पा ले.-

सत्य से भटका मनुज, पथ भ्रष्ट होकर रह गया है।
उद्दण्डता का आक्रमण, मन मौन होकर सह गया है।।
उद्दण्डता के सामने सत्याचरण की बात कर लें-
अथक रहकर लक्ष्य पा ले.-

परिश्रम से जी चुराना साहसी को कब सुहाता?
उच्च आदर्शों से युत्, जीवन जगत् में क्या न पाता??
साहसी बन आदर्शों के, अनुकरण की बात कर लें-
अथक रहकर लक्ष्य पा ले.-

दोष, दुर्गुण, दुर्व्यसन का, फल सदा दुःख दुर्गति है।
सुख सुफल है सद्गुणों का, सज्जनों की सम्मति है।।
संसार के सब सद्गुणों के संवरण की बात कर लें-
अथक रहकर लक्ष्य पा ले. -

हैं करोड़ों पेट भूखे, ठण्ड से ठिठुरे बदन हैं।
और कुछ के नियंत्रण में, अपरिमित भूषण-वसन हैं।।
भूख से व्याकुल उदरगण के भरण की बात कर लें-
अथक रहकर लक्ष्य पा ले.-

अन्न जल से त्रस्त मानव का हृदय जब क्रुद्ध होगा।
सूखी आंतो का शोषण से, तब भयानक युद्ध होगा।।
निरन्तर नजदीक आते, न्याय-रण की बात कर लें-
अथक रहकर लक्ष्य पा लें

आर्यसमाज शक्तिनगर

ऋषि मेला २०१५ दानदाता सूची

१. अध्यात्मिक शोध संस्थान, दिल्ली २. श्री राजेश आर्य, रेवाड़ी, हरियाणा ३. श्रीमती उर्मिला राजेत्या, अजमेर ४. श्रीमती विमला आर्या व श्रीमती नीरू वालिया, अम्बाला केन्ट, पंजाब ५. श्री शिवकुमार कुर्मी, जयपुर, राज. ६. श्री गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली ७. सेवाभारती, अजमेर ८. श्री कमल सिंह आर्य, रेवाड़ी, हरियाणा ९. श्री रमेश मलिक, दिल्ली १०. श्री देवदत्त तनेजा, अजमेर ११. श्री निरन्जन साहू, अजमेर १२. श्री अनिल कुमार, उदयपुर, राज. १३. श्री चन्द्रकान्त दत्त, पानीपत, हरियाणा १४. श्री अविनाश चन्द्र, हरियाणा १५. श्री आचार्य, श्री आर्यगुरुकुल, चित्तौड़गढ, राज. १६. श्री मुख्याधिष्ठाता, श्री गुरुकुल चित्तौडगढ़, राज. १७.श्री ज्ञानसिंह गहलोत, जोधपुर १८. श्री सवाई आर्य, बालोतरा, राज. १९. शकुन मोटर्स प्रा. लि. जोधपुर, राज. २०. श्री विजयपाल सिंह, बिजनौर, म.प्र. २१. डॉ. अर्जुनदेव तनेजा, नई दिल्ली २२. जेनिथ इन्टरप्राइजेज, नई दिल्ली २३. डॉ. गेंडाराम आर्य, यमुनानगर, हरियाणा २४. श्री बाबूलाल जोशी, इन्दौर, म.प्र. २५. श्रीमती कौशल्या, बीकानेर, राज. २६. श्री ईश्वरदयाल माथुर, जयपुर, राज. २७. श्री बेचनप्रसाद जयसवाल, गोरखपुर, उ.प्र. २८. श्रीमती आशा अरोड़ा, अजमेर २९. मंत्री जी, आर्यसमाज साकेत, नई दिल्ली ३०. आर्यसमाज, कोशली, हरियाणा ३१. श्री कश्मीरी लाल, मेरठ, उ.प्र. ३२. श्रीचन्द चौहान, मेरठ, उ.प्र. ३३. श्री धर्मवीर, अजमेर ३४. श्रीमती आशा मेहता, दिल्ली ३५. श्री महाजन पेपर मार्ट, दिल्ली ३६. श्री धर्मवीर रीहानी, अजमेर ३७. श्री जितेन्द्र शर्मा, अजमेर ३८. श्री विनोद कुमार, अजमेर ३९. श्री राजेन्द्र शर्मा, अजमेर ४०. स्व. श्री करसनसिंह अजमेर ४१. श्री सोहनलाल कटारिया, अजमेर ४२. माता शकुन्तला देवी, अजमेर ४३. श्री वीरेन्द्र आर्य, अजमेर ४४. श्री ग्यारसीराम चौरसिया, शिवपुरी, म.प्र. ४५. श्री राजकुमार भावसार, विदिशा, म.प्र. ४६. श्रीमती ज्ञानवती श्रीवास्तव, विदिशा, म.प्र. ४७. आर्यसमाज गजबासोदा, विदिशा, म.प्र. ४८. श्री सुरेशकुमार सैनी, विदिशा, म.प्र. ४९. दयानन्द गौशाला, वोदन ५०. श्री धर्मसिंह आर्य, अलवर, राज. ५१. मंत्री/प्रधान, आर्यसमाज तिजारा, अलवर, राज. ५२. श्री ब्रजलाल आर्य, अलवर, राज. ५३. आर्य महिला मंडल, नासोपुर ५४. आर्यसमाज नासोपुर, अलवर, राज. ५५. महात्मा चयावनमुनि, नासोपुर ५६. श्री देवानसिंह, भरतपुर, राज. ५७. जम्मानसिंह, भरतपुर, राज. ५८. मंत्री/प्रधान, आर्यसमाज, डीग, भरतपुर, राज. ५९. आर्यसमाज, श्रीगंगानगर, सवाईमाधोपुर, राज. ६०. आर्यसमाज, सवाईमाधोपुर, राज. ६१. श्रीमती वेदकुमारी, चंडीगढ, ६२. श्रीमती राजकुमारी हरबंसलाल ट्रस्ट, जालंधर, पंजाब ६३. श्री राम मेहर आर्य, पानीपत, हरियाणा ६४. श्री रनधीर सिंह आर्य,तारोरो ६५. मधु एजेन्सिस, अजमेर ६६. श्री पुष्पेन्द्र शर्मा, जयपुर, राज. ६७. श्री नन्दकिशोर, रपसाड़, झारखंड ६८. श्री एस.बी.प्रकाश राव, हैदराबाद ६९. श्री देवेन्द्र मलिक, मथुरा ७०. श्री ब्रजमोहन लोढा, हरिद्वार, उत्तराखण्ड ७१. सूबेदार ओमप्रकाश, हनुमानगढ़ ७२. श्री रामस्वरूप, अलवर, राज. ७३. श्री ओमप्रकाश अरोड़ा, दिल्ली ७४. श्री रवि तोषनीवाल, अजमेर ७५. श्री रामधन रेनीवाल, नागौर, राज. ७६. श्री जिले सिंह, पाहाराप ७७. श्री रामगोपाल खींची, बारान ७८. श्रीमती विधुशर्मा/डॉ. ओमशर्मा, अजमेर ७९. डॉ. रेखा अरोड़ा / श्री रामचरण अरोड़ा, नई दिल्ली ८०. श्रीमती स्नेहलता, अम्बाला सिटी ८१. माता प्रेमवती, अजमेर ८२. माता सरोजदेवी, अजमेर ८३. श्री चन्द्रप्रकाश, अजमेर ८४. श्री मोहनलाल तँवर, अजमेर ८५. श्री नारायण सिंह चौहान, चुरु, राज. ८६. श्री अभिमन्यु सिंह/ श्री तन्मय सिंह, अजमेर ८७. श्री राजेश त्यागी, अजमेर ८८.वर्मा एगरिक्लचरल इन्डस्ट्रीज, कोरपोरेशन, अजमेर ८९. बांठिया एण्ड कं., अजमेर ९०. जिन्दल रेडीमेड, अजमेर ९१. आर्यन ब्रंदर्स, अजमेर ९२. अग्रवाल क्लिनिक, अजमेर ९३. श्री नकुल भारद्वाज, अजमेर ९४. आर. आर. ज्वैलर्स, अजमेर ९५. मदनलाल सुन्दरदेवी चेरिटेबिल ट्रस्ट, अजमेर ९६. कम्पीटिशन प्लस संस्थान, अजमेर ९७. डॉ. गौतमदेव शारदा, अजमेर ९८. श्री पुरसोत्तम बूब, अजमेर ९९. डॉ. बद्रीप्रसाद, पंचोली, अजमेर १००. श्री एस.एस.सिद्धु, अजमेर

प्रतिक्रिया

१. पाखण्डों पर करारी चोट- 'परोपकारी' पाक्षिक नहीं प्राप्त होती तो बड़ी बेचैनी हो जाती है। आर्य जगत् की श्रेष्ठ पत्रिकाओं में शुमार है आपकी परोपकारी। 'राधे माँ' पर लिखा सम्पादकीय पाखण्डों पर करारी चोट है। आपके सम्पादकीय पठनीय एवं मनन करने योग्य है। शेष लेख भी ज्ञानवर्धक हैं। भाजपा के प्रबुद्ध प्रकोष्ठ से सम्बन्धित हूँ, परन्तु ऋषि दयानन्द की उपेक्षा मुझे सहन नहीं होती, अत: आर.एस.एस. वालों को मैं स्वामी जी महाराज को पूर्ण निष्ठा से मानने का सुझाव देता हूँ।

- डॉ. लक्ष्मणसिंह टाँक, मुजफ्फरनगर, उ.प्र.

ज्ञान का परिचय- 'परोपकारी' पाक्षिक के अक्टूबर प्रथम में आपका सम्पादकीय लेख 'तिब्बत की दासता, अहिंसक होने का दण्ड' पढ़कर बहुत प्रसन्नता हुई। वैसे तो आपके सभी सम्पादकीय पढ़ने योग्य होते हैं, परन्तु इस लेख के द्वारा आपने जो अपने ज्ञान का परिचय दिया है, उसे जानकर मैं अत्यन्त गद्‌गद् हो गई हूँ। आप जैसे योग्य व्यक्तियों के ऊपर आर्य समाज का दायित्व है। महर्षि दयानन्द के मिशन को पूरा करने के लिए आप जो कार्य कर रहे हैं, उसके लिए आप प्रशंसा के पात्र हैं। हमारी शुभकामनाएँ हमेशा आपके साथ हैं। ऋषि के मिशन को पूरा करने के लिए हम सभी आपके साथ हैं। परमात्मा की कृपा आपके ऊपर हमेशा बनी रहे और आप इसी प्रकार अपनी प्रभावशाली लेखनी के द्वारा महर्षि दयानन्द का कार्य करते रहें। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ-

- सुशीला भगत, प्रधाना, स्त्री आर्य समाज, मॉडल टाऊन, जालन्धर, पंजाब

मन आनन्दित हो गया- काफी समय से अजमेर आने का मन बना रहा था। इस बीच मैं एक मास के लिए विदेश गया था, जहाँ मुझे आपके तथा आचार्य सत्यजित् जी के व्याख्या यू ट्यूब पर सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, तब से मैंने ऋषि उद्यान आने का तथा ऋषि मेले के प्रति अपनी आस्था प्रकट करने हेतु निश्चय कर लिया।

ऋषि उद्यान का रमणीय व भक्तिपूर्ण वातावरण, साथ में भव्य झील तथा ऋषि मेले के उत्कृष्ट कार्यक्रम में भाग लेकर मन आनन्दित हो गया। प्रात: ब्रह्म मुहूर्त पर मधुर मन्त्रों से दिनचर्या आरम्भ होकर रात्रि १० बजे तक के प्रत्येक कार्यक्रम उच्चकोटि के थे। प्रात: व सायं यज्ञ, वेदगोष्ठी, प्रवचन तथा भजनों का विशेष आकर्षण रहा, सारा कार्यक्रम पूर्णत: अनुशासित तथा व्यवस्थित रहा और इतने लोगों का सुविधापूर्वक तथा निर्विघ्न प्रबन्ध करने का श्रेय आप तथा आपकी पूरी टीम को जाता है। मेरी यात्रा चिरस्मरणीय रहेगी और प्रत्येक वर्ष ऋषि मेले में आने को प्रेरित करती रहेगी।

अभी भी 'आनन्दकंद ऋषि दयानन्द की गाथा गाते हैं, ऋषिवर को लाख प्रणाम' की मधुर रिकॉर्डिंग गुंजायमान है। ऋषिवर के जितने भी गुण गाए जाएँ, वे उनके उपकारों की तुलना में कम ही रहेंगे। ऋषिवर ने भारत के पुनरुत्थान और विश्व कल्याण में अपना सारा जीवन न्यौछावर कर दिया। उनका योगदान न केवल अध्यात्म क्षेत्र में उच्चतम शिखर पर पहुँचा, परन्तु स्वराज्य का शंखनाद फूँकने वाले तथा सामाजिक व राजनीतिक क्षेत्र में क्रान्ति लाने वाले वे एक अतुलनीय युग पुरुष थे। उनसे जुड़ने का अर्थ है- वेद की शरण में अथवा ईश्वर की शरण में जाना।

वर्तमान समय में ऋषिवर की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ गई है, जबकि आडम्बर व पाखण्ड अपनी चरम सीमा पर है, अत: हमें वेद प्रचार को और गतिशील करना होगा तथा ऋषि के घोषित वेद मार्ग पर चलने हेतु देश के कोने-कोने में पहुँचना होगा। इस कार्य को सुचारु रूप से सम्पन्न करने में आपकी सभा पूर्णत: सक्षम है और इस यज्ञ में ऋषि के सब अनुयायियों से तन, मन, धन समर्पण अपेक्षित है।

हमारे देश का दुर्भाग्य रहा कि हमारे शासकों ने ऋषि के उपकारों का यथार्थ मूल्यांकन नहीं किया और जो गौरव व सम्मान उनको प्रदान किया जाना था, वह नहीं किया। इस दिशा में भी हमें प्रयत्नशील होना होगा।

आपके घोषित वेद प्रचार निधि यज्ञ में अपनी समाज की ओर से हम एक लाख रु. प्रदान कर रहे हैं। कृपया इन्हें स्वीकार कीजिए।

- प्रियव्रत, आर्य समाज, ग्रेटर कैलाश पार्ट-।।, नई दिल्ली

स्तुता मया वरदा वेदमाता-२५

अहं तद्विद्वला पतिमभ्यसाक्षि विषासहिः।

एक महिला को अपने अनुकूल जीवन साथी चुनने का अधिकार है। निर्णय महिला का है। ऐसा करने के लिये उचित आधार है- पति को अनुकूल बनाने की क्षमता, पति को सहन करने का सामर्थ्य। परिवार की धुरी महिला होती है। जैसे धुरी में भार सहने और भार को खींचने की क्षमता होती है, उसी प्रकार महिला में परिवार के सब लोगों को साथ रखने का सामर्थ्य होना चाहिए। इसके लिये प्रथम योग्यता सहनशील होना है। घर में जितने भी सदस्य हैं, सबकी अपनी-अपनी इच्छायें होती हैं। सभी चाहते हैं, उनकी बात मानी जाये, उनके अनुकूल कार्य हो, परन्तु ऐसा सदा सम्भव नहीं है।

परिवार की विशेषता होती है, इसमें वृद्ध भी होते हैं, युवा भी, बालक-बालिकायें, स्त्री-पुरुष। इन सब विविधताओं में सामञ्जस्य बैठाने के लिये बुद्धिमत्ता, सद्भाव, सहनशीलता की आवश्यकता है। मनुष्य की जब इच्छा पूरी नहीं होती, तो उसे क्रोध आता है, उस समय यदि सामने वाला भी क्रोध कर बैठेगा, तो असहमति लड़ाई में बदल जायेगी। यदि कोई अपने क्रोध पर नियन्त्रण नहीं कर सकता, तो दूसरे को अपनी भावनाओं पर नियन्त्रण करना चाहिए। एक बार सोनीपत में आर्य समाज बड़ा बाजार का कार्यक्रम था। प्रसंग से एक परिवार में जाने का अवसर मिला, स्वाभाविक रूप से परिवार के समायोजन की चर्चा चली, तो गृहिणी ने समस्या के समाधान का सरल उपयोगी उपाय सुझाया। वह कहने लगी- यदि मेरे पति को किसी कारण से क्रोध आता है और वे ऊँची आवाज में बोलने लगते हैं, तो मैं दूरदर्शन की आवाज को ऊँचा कर देती हूँ। मेरे पति कुछ भी बोलते रहते हैं, मुझे सुनाई नहीं देता। कुछ देर बाद वे शान्त हो जाते हैं और सब सामान्य हो जाता है। जब कभी मुझे क्रोध आता है, तो मेरे पति छड़ी लेकर बाहर घूमने निकल जाते हैं, जब वे लौटते हैं तो सब शान्त हो चुका होता है। इसलिये वेद कहता है- **पतिमभ्यसाक्षि**। मैं पति को सहन कर सकती हूँ।

एक और बात मन्त्र में कही, यह सहनशक्ति सामान्य नहीं, विशेष सहनशक्ति है। हमारे समाज में महिला को सहनशील बनने की बात की जाती है, परन्तु अत्याचार और प्रताड़ना को सहन करने की शक्ति सहनशीलता नहीं है। अन्याय का प्रतिकार करने में जो बाधा और कष्ट आते हैं, उन्हें सहन करने की शक्ति होनी चाहिए। परिवार में अलग विचारों के बीच तालमेल बैठाना, यह कार्य सहनशीलता के बिना सम्भव नहीं। हमारी इच्छा रहती है कि हम जो सोचते हैं- उसी को सबको स्वीकार करना चाहिए। यह धारणा सभी की हो तो पूर्ण होने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। ऐसी स्थिति में परिवार में विवाद की स्थिति बनी रहती है।

हमें मनुष्य स्वभाव का भी स्मरण रखना चाहिए कि परिवार में सब प्रेम से रहें, लड़ाई-झगड़ा न करें, यह उपदेश तो ठीक है, परन्तु ऐसा होना कठिन ही नहीं, असम्भव भी है। हम चाहते हैं कि दूसरा मेरे अनुसार चले, उसे अपने को बदलना चाहिए। यह उपाय कभी सफल नहीं होता। इसका उपाय है, जो सदस्य जैसा है, उसे उसी रूप में स्वीकार कर लिया जाय। उसको स्वीकार कर लिया जाय तो उपाय हमको करना पड़ता है। हम मार्ग से जा रहे हैं, मार्ग टूटा हुआ आता है, तब हम मार्ग सुधारने में नहीं लगते और न ही यात्रा स्थगित करते हैं। हम उस मार्ग से बचकर निकलने का उपाय करते हैं। उसी प्रकार परिवार में विवाद होने की दशा में बचने का उपाय सहनशीलता है। आवेश के समय को बीत जाने देते हैं, तो परिवार का वातावरण सहज होने में समय नहीं लगता। विवाद हो जाये, यह स्वाभाविक हैं, परन्तु इस विवाद को समाप्त करने के लिये संवाद का मार्ग सदा खुला रखना होता है। परिवार के सन्दर्भ में रुष्ट सदस्य को संवाद के द्वारा मनाया जा सकता है, सामान्य किया जा सकता है। मत-भिन्नता की दशा में समझाने के प्रयास निष्फल होने पर सहना ही एक उपाय शेष रहता है। इसी कारण इस मन्त्र में एक शब्द आया है- **विषासहिः**। इसका अर्थ है विशेष रूप से सहन करने की शक्ति। इसी उपाय से जो वस्तु प्राप्त है, उसे बचाया जा सकता है।

यहाँ सहन करने की बात स्त्री के सन्दर्भ में क्यों कही गई है, क्योंकि परिस्थितियों के चुनाव का अधिकार स्त्री को दिया गया है। उसकी घोषणा है- अपने सौभाग्य की निर्मात्री मैं स्वयं हूँ। मैंने श्रेष्ठ सिद्ध करने की घोषणा की, मैं सूर्य के समान तेजस्विनी हूँ। जब पति को मैंने प्राप्त किया है, मेरी इच्छा से मेरे चुनाव से मैंने पाया है, तो पति को और परिवार को अपनी सहनशीलता से जोड़कर रखने का उत्तरदायित्व भी मेरा ही है। यही घोषणा इस मन्त्र में की गई है।

क्रमशः ....

संस्था - समाचार

१६ से ३१ दिसम्बर २०१५

यज्ञ एवं प्रवचन- जैसा कि विदित है, ऋषि उद्यान आर्य जगत् के उन स्थलों में से हैं, जहाँ पूरे वर्ष प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ का अनुष्ठान अपरिहार्य रूप से किया जाता है। प्रातःकाल यज्ञोपरान्त वेद के कुछ मन्त्रों का पाठ तथा महर्षि दयानन्द कृत वेदभाष्य का स्वाध्याय किया जाता है। रविवार प्रातःकाल विशेष यज्ञ किया जाता है, जिसमें नगर निवासी सज्जन, माताएँ, बहनें और बच्चे सम्मिलित होते हैं और अपनी-अपनी आहुतियाँ प्रदान करते हैं। सायंकाल प्रतिदिन यज्ञ और महर्षि दयानन्द जी द्वारा पूना में दिये गये, प्रवचन '**उपदेश मन्जरी**' का पाठ एवं व्याख्यान होता है। प्रत्येक रविवार को सायंकाल गुरुकुल के ब्रह्मचारियों का भजन, प्रवचन होता है। यहाँ पर दर्शन, उपनिषद्, रचनाअनुवाद कौमुदी की कक्षायें निरन्तर चलती रहती हैं, जिसमें गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के साथ-साथ आश्रमवासी संन्यासी, वानप्रस्थी, महिलायें और बाहर से आने वाले जिज्ञासु ज्ञान अर्जित करते रहते हैं। आर्यवीर-दल का प्रशिक्षण कार्यक्रम सुबह शाम नियमित रूप से होता है, जिसमें जुडो-कराटे, लाठी चलाने का अभ्यास आदि कराया जाता है। इसमें नगर के युवा वर्ग और बालक भाग लेते हैं। प्रतिदिन प्रातःकाल सरस्वती भवन प्रांगण में आसन-प्राणायाम आदि क्रियाएँ करायी जाती हैं।

प्रातःकालीन सत्संग में **डॉ. धर्मवीर जी** ने ऋग्वेद के वागाम्भृणी सूक्त की व्याख्या करते हुए बताया कि परमात्मा के बनाये पदार्थों में दिव्य गुण और शक्ति है। संसार में जो पदार्थ हैं, उसको देखकर उस ईश्वर के सामर्थ्य को हम जान सकते हैं। वह अपनी दिव्य शक्ति, सामर्थ्य से समस्त ऐश्वर्यों का उत्पादन, संरक्षण प्रकाशन करता है। वह सब मनुष्यों को उपदेश करता है कि इस संसार का जो समस्त ऐश्वर्य है, मैं उसका सम्पूर्ण अधिकारी हूँ। उसका सामर्थ्य दिखाई नहीं देता, किन्तु हमारे जीवन की प्रत्येक घटना में ईश्वर की सहायता और सामर्थ्य ही काम कर रहा है, क्योंकि हम उसके आधीन हैं। आपने बताया कि ज्ञान दो प्रकार का होता है- स्वाभाविक और नैमित्तिक। मनुष्य को नैमित्तिक ज्ञान न मिले तो पशु और मनुष्य में कोई अन्तर नहीं होगा। मनुष्य अल्पज्ञ है, परमात्मा सर्वज्ञ है, इसलिये परमात्मा से ज्ञान प्राप्त करना पड़ता है, क्योंकि बहुत ज्ञान वाले से थोड़े ज्ञान वाले को लेना पड़ता है। जीव एकदेशीय है, इसलिए अल्पज्ञ, अल्प-सामर्थ्य वाला है। परमात्मा सर्वव्यापक है, इसलिये सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान है। वह संसार का सर्वप्रथम गुरु है। जो सब श्रेष्ठ कर्मों का सबसे पहला उपदेशक है, अर्थात् कौन-सा काम कैसे करना है, इसको बताने वाला सर्वप्रथम परमेश्वर है। सृष्टि के आदि में संसार के सब पदार्थों के नाम वेद से लिये गये। वेद में जो नाम वस्तुओं के बताये गये हैं, वे वस्तुओं के गुणों के कारण हैं। शब्द के पर्यायवाची लोक में होते हैं, वेद में नहीं। शब्द और अर्थ का सम्बन्ध नित्य है। परमात्मा के सब कार्य पूर्ण हैं। सबसे पहले ज्ञान को परमात्मा ने प्रेरणा द्वारा दिया। परमात्मा पूर्ण है, इसलिये उसका कोई काम अधूरा नहीं है, समग्रता ही उसकी विशेषता है। वह सदा सब जगह उपस्थित है और उसका ज्ञान भी सदा उपस्थित रहता है। बहुत स्थानों में उसका सामर्थ्य दिखाई देता है। दृश्य, अदृश्य, जड़, चेतन, सूक्ष्म, स्थूल में उसकी दिव्य शक्तियाँ काम करती हैं। परमात्मा का सामर्थ्य सब पदार्थों के बाहर और भीतर व्याप्त होकर स्थित है।

प्रातःकालीन सत्संग में प्रवचन देते हुए **आचार्य सत्यजित् जी** ने ऋग्वेद के तीसरे मंडल के ५६ वें सूक्त के प्रथम मन्त्र की व्याख्या करते हुए कहा कि हमारी उपासना का विषय परमात्मा ही होना चाहिये। ईश्वर को छोड़कर किसी अन्य की उपासना नहीं करनी चाहिये। वही उपासना के योग्य है। यदि किसी अन्य की उपासना करें तब भी ईश्वर को छोड़कर न करें। परमात्मा के नियम और उपदेश ऐसे हैं, जिनका खंडन विद्वान् भी नहीं कर सकते। छली-कपटी, विकृत वा कुटिल बुद्धि वाले ईश्वर के नियमों का नाश नहीं कर सकते। ध्यान करने वाले श्रेष्ठ पुरुष भी उन नियमों का नाश नहीं करते। अंतरिक्ष और पृथ्वी भी उन नियमों का पालन करते हैं, नाश नहीं करते। द्रोहरहित

बुद्धिमान अध्यापक और उपदेशक भी उन नियमों का नाश नहीं करते। राजा भी जानने के योग्य प्रजाओं के साथ मिलकर उन नियमों का नाश नहीं कर सकते। पर्वत आदि भी उन नियमों का नाश नहीं करते। परमात्मा के नियमों का नाश करना या झूठलाना सम्भव नहीं है। वेद के उपदेश, जैसे सत्यभाषण से लाभ होना आदि को संसार के सभी मनुष्य मन से स्वीकार करते हैं। मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र है, किन्तु उसके कर्मफल भोगने का नियम अटल है। किसी का सामर्थ्य नहीं है कि ईश्वर के नियमों का उल्लंघन कर सके। परमात्मा का ज्ञान पूर्ण और उसके सब कर्म भ्रान्ति से रहित है। परमात्मा की सब रचना जीवों के सुख के लिये है। दु:ख का कोई साधन परमात्मा ने नहीं बनाया। जीव अपनी अज्ञानता के कारण दु:ख पाता है।

सायंकाल महर्षि दयानन्द जी के पूना प्रवचन पर आधारित **उपदेश मञ्जरी** पुस्तक की चर्चा करते हुए **आचार्य सत्यजित् जी** ने बताया कि स्वामी जी ने पूना में भिड़े के बाड़े में कुल ५४ व्याख्यान दिये। उनके प्रवचन तत्कालीन मराठी भाषा के समाचार पत्र में छपते थे। जिसका हिन्दी अनुवाद करके पुस्तक रूप में छापा गया। उनका पहला प्रवचन ईश्वर सिद्धि पर हुआ था। स्वामी जी मानते थे कि ईश्वर की सिद्धि के बिना धर्म व्याख्यान करने से कोई लाभ नहीं है, क्योंकि जो ईश्वर के गुण, कर्म-स्वभाव को ठीक प्रकार से नहीं जानता, वह कभी भी धर्म को समझ नहीं सकता। स्वामी जी ने वेद और उपनिषद् आदि आर्ष ग्रन्थों के प्रमाण से ईश्वर के स्वरूप और गुणों की व्याख्या की। वे ईश्वर के अवतार को वेद विरुद्ध मानते थे और सप्रमाण उसका खंडन करते थे। श्री रामचन्द्र, श्री कृष्ण को वे महापुरुष के रूप में स्वीकार करते थे, क्योंकि ईश्वर का अवतार होना असम्भव है।

प्रात:कालीन सत्संग में **आचार्य सोमदेव जी** ने कहा कि संसार के अन्दर लगभग प्रत्येक प्राणी की जो चेष्टायें हो रही हैं, वे सब सुख की ओर अग्रसर होने, दु:ख से छूटने और कुछ विशेष पाने की इच्छा में देखी जा रही है। चींटी से लेकर सभी पशु, पक्षी और मनुष्य सुख के लिये ही सब काम कर रहे हैं। सुख वहाँ मिलेगा, जहाँ शान्ति होगी। शान्ति तब होती है, जब व्यक्ति एक-दूसरे विश्वास पर करता है। विश्वास वहाँ मिलता है, जहाँ धर्म होता है। धर्म वहाँ होता है, जहाँ लोग ईश्वर भक्ति करने वाले होते हैं। ईश्वर और धर्म को जानकारी उन मनुष्यों को होती है, जो अर्थ और काम में आसक्त नहीं होते, वेद आदि शास्त्रों पर पूर्ण विश्वास करते हैं। धर्म से धन कमाने पर धन में आसक्ति नहीं होती, किन्तु अधर्म से कमाने वाला धन के पीछे पागल हो जाता है और बुद्धि खराब हो जाती है। धन आदि पदार्थों से अपना और दूसरों का हित करने वाला मनुष्य धन में आसक्त नहीं होता। विभिन्न कामनाओं और इन्द्रिय सुख में फँसा हुआ मनुष्य ईश्वर और धर्म को नहीं जान सकता। जो इनसे दूर होता है, वही वेद, ईश्वर और धर्म को जानता है। जो दुश्चरित् से अलग नहीं है, जिसका मन शान्त नहीं है वह ईश्वर की उपासना नहीं कर सकता। शान्त निर्मल मन ही ईश्वर में लगता है।

स्वामी श्रद्धानन्द जी के महान् व्यक्तित्व के विषय में उन्होंने बताया कि आर्य समाज में महर्षि दयानन्द के बाद स्वामी श्रद्धानन्द जी ही हमारे लिये अत्यन्त श्रद्धा के पात्र हैं। स्वामी जी ने पाश्चात्य शैली के शिक्षा पद्धति से अपने देशवासियों को बचाने के लिये १९०२ में गुरुकुल काँगड़ी की स्थापना की। स्वामी जी ने पाँच गुरुकुल खोले थे- गुरुकुल काँगड़ी, गुरुकुल कुरुक्षेत्र, गुरुकुल सूपा, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ और गुरुकुल मुल्तान। जो गुरुकुल मुल्तान में खुलवाया था, वह देश के बँटवारे में पाकिस्तान के हिस्से में चला गया। वे अंग्रेज सरकार से डरते नहीं थे। स्वामी जी महान् तपस्वी, स्वजातिरक्षक और देशभक्त थे। स्वामी जी हिन्दू शुद्धि सभा का गठन करके मुसलमानों को वापस वैदिक धर्म में ला रहे थे। मुसलमानों को यह कार्य सहन नहीं हुआ और उन्होंने स्वामी जी की हत्या करवा दी। उस वीर बलिदानी का जीवन चरित्र सदा हमें प्रेरित करता रहेगा।

जम्मू से आर्य परिवारों के साथ भ्रमण हेतु आये **स्वामी चैतन्य मुनि जी** ने कहा कि जिन-जिन स्थानों में स्वामी दयानन्द जी के व्याख्यान, शास्त्रार्थ हुए और जहाँ-जहाँ उन्होंने अपना समय व्यतीत किया, वे सब स्थान हम आर्यों के तीर्थ स्थल हैं। महर्षि दयानन्द जी मूलत: आध्यात्मिक महापुरुष थे, समाज सुधार और वैदिक धर्म का प्रचार

उनका स्वाभाविक कार्य था। आगे आपने बताया कि हमें अपने मन, बुद्धि, इन्द्रियों आदि को पवित्र बनाकर और नियम अनुशासन का पालन करते हुए संसार के कल्याण के लिये कार्य करना चाहिये। वेद प्रचार में अनेक कठिनाइयाँ आती हैं, लेकिन अपना चरित्र तथा आत्मविश्वास बनाये रखना चाहिये और धैर्य नहीं खोना चाहिये। अग्निहोत्र यज्ञ, योग, स्वाध्याय से प्रत्येक मनुष्य को लाभ होता है। अग्निहोत्र यज्ञ से वातावरण शुद्ध होता है, इसके साथ ही अनेक रोगों का नाश होता है। यज्ञ से आध्यात्मिक और वैज्ञानिक दोनों प्रकार के लाभ होते हैं। इससे लौकिक और पारलौकिक जीवन में सुख होता है।

रविवार सायंकालीन सत्र में **ब्र. राघव जी** ने कहा कि जो मनुष्य ईश्वर के स्वरूप, गुण, कर्म व स्वभाव को ठीक से नहीं जानता, वह अपने दु:ख की स्थिति में ईश्वर को कोसता है कि उसने मेरे साथ न्याय नहीं किया। भगवान ने मुझे रूप, धन, स्वास्थ्य, अच्छा परिवार नहीं दिया। मनुष्य को जो भी मिलता है, वह अपने कर्मों के अनुसार ही मिलता है। ईश्वर किसी के साथ पक्षपात नहीं करता, जो जैसा कर्म करता है, उसको वैसा ही फल देता है। यह संसार एक परीक्षा केन्द्र है, यहाँ जो मनुष्य धैर्य व बुद्धिपूर्वक कर्म करते हुए जीवन बितायेगा, उसका अगला जन्म अच्छा होगा। **ब्रह्मचारी मुकेश जी** ने कहा कि आर्य समाज का प्रचार-प्रसार कैसे बढ़े? इस पर आज विचार करना अत्यन्त आवश्यक है। **ब्रह्मचारी सत्यवीर जी** ने कहा कि मनु जी महाराज ने जो दस लक्षण युक्त धर्म बताया है, वही संसार के सब मनुष्यों के सुख का कारण है।

डॉ. धर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रम:- (क) १९-२७ दिसम्बर २०१५- आर्य समाज, विधान सरणी, कोलकाता में उपदेश।

(ख) १-३ जनवरी २०१६- आर्य समाज, संदेश विहार, दिल्ली में वार्षिकोत्सव में व्याख्यान।

(ग) ९-१७ जनवरी २०१६- विश्व पुस्तक मेले में उपस्थिति।

आचार्य सोमदेव जी का प्रचार कार्यक्रम:- सम्पन्न कार्यक्रम: (क) २३ दिसम्बर २०१५- गन्नोर, सोनीपत में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान समारोह में मुख्य वक्ता के रूप में सम्बोधन।

(ख) २५ से २७ दिसम्बर २०१५ - माता सरोज जी, अजमेर के घर सामवेद पारायण यज्ञ में ब्रह्मा।

(ग) २७ से २८ दिसम्बर २०१५- डेगाना, नागौर, राज. में मानधना परिवार में सत्संग का कार्यक्रम।

आगामी कार्यक्रम:- (क) २८ दिसम्बर २०१५ से १ जनवरी २०१६- आर.एस.वी. स्कूल, बीकानेर में बच्चों को उपदेश।

(ख) १-३ जनवरी २०१६- जयपुर में सामवेद पारायण यज्ञ में ब्रह्मा।

(ग) ४-१० जनवरी २०१६- गाँव मुण्डिया, टोंक में यजुर्वेद पारायण यज्ञ में ब्रह्मा।

(घ) १२-१४ जनवरी २०१६- ग्राम जमानी, इटारसी में यज्ञ प्रवचन।

आचार्य सत्येन्द्र जी की केरल यात्रा:- (क) २० दिसम्बर २०१५- केरल राज्य में पालककाड जिले के कारलमन्ना गाँव के ३५ लोगों के उपनयन संस्कार में ब्रह्मा।

(ख) २३ दिसम्बर २०१५- गुरुदत्त भवन में ऋषिराम आर्य उपदेशक महाविद्यालय का उद्घाटन

(ग) २३-२५ दिसम्बर २०१५- त्रिदिवसीय वेद-वेदाङ्ग स्वाध्याय-ध्यान शिविर।

आचार्य कर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रम-(क) १८ दिसम्बर २०१५- भीलवाड़ा, राज. में श्री नरेन्द्र जी लोढ़ा के जन्मोत्सव पर यज्ञ व सत्संग।

(ख) २४-२७ दिसम्बर २०१५- बीकानेर निवासी श्रीमती सीमा आर्या जी के सेंट सीनियर सैकण्ड्री एन.एन. पब्लिक स्कूल में यजुर्वेद पारायण यज्ञ।

(ग) २-३ जनवरी- २०१६ :- जोधपुर में आयोजित आर्यवीर दल का शीतकालीन शिविर।

(घ) १२-१४ जनवरी- २०१६- ग्राम जमानी, इटारसी में यज्ञ-प्रवर्चन।

इस बात का निश्चय है कि ब्रह्मचर्य्य उत्तम शिक्षा विद्या शरीर और आत्मा का बल आरोग्य पुरुषार्थ ऐश्वर्य सज्जनों का संग आलस्य का त्याग यम-नियम और उत्तम सहाय के विना किसी मनुष्य से गृहाश्रम धारा जा नहीं सकता। **-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.३१**

आर्यजगत् के समाचार

१. बलिदान दिवस मनाया- आर्य समाज मन्दिर शाहपुरा, जि. भीलवाड़ा, राज. में स्वामी श्रद्धानन्द दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। यज्ञ द्वारा कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता शिक्षाविद् शिवप्रकाश सोमानी ने की तथा मुख्य अतिथि पूर्व सैनिक- राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत रामेश्वरलाल त्रिपाठी थे। आर्य समाज के प्रधान कन्हैयालाल, मन्त्री सत्यनारायण तोलम्बिया, शिक्षाविद् राजेन्द्र प्रसाद डाँगी, हीरालाल आर्य, संतोकसिंह चौधरी, कन्हैयालाल साहू ने स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन के अलग-अलग प्रसंगों पर विचार रखे।

२. आर्थिक नीतियों में सुधार आवश्यक- वैदिक वीरांगना दल, जयपुर, राज. की ओर से देश के आर्थिक विकास पर महिलाओं ने विचार प्रस्तुत किए। कार्यक्रम की शुरूआत में कुमारी अनामिका शर्मा ने बताया कि देश का आर्थिक सुधार चाणक्य के अर्थशास्त्र और वैदिक उपायों से हो सकता है। गाय हमारी आर्थिक आधार होती है। ये विचार शहर के और राज्य के अनेक गणमान्य बुद्धिजीवियों ने दिए, जिनमें डॉ. साधना रस्तौगी-सेवानिवृत्त संयुक्त निदेशक-कॉलेज शिक्षा, श्री भगवान सहाय परेवा-भूतपूर्व सिविल जज, किरण बंसल, अंजु मंगल, ज्योति, शशि जैन, सुनीता गुप्ता व डॉ. अंजना बैराठी प्रमुख थे।

३. संस्कार शिविर सम्पन्न- महर्षि दयानन्द उच्च माध्यमिक विद्यालय, फतेहनगर में संस्कार शिविर का आयोजन दि. २५ से २८ दिसम्बर २०१५ तक किया गया, जिसमें लगभग २५० शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविर में ध्वजारोहण डॉ. मोहनप्रकाश आर्य- आर्य समाज सनवाड़ ने किया। इस अवसर पर शिविरार्थियों के लिये विभिन्न बौद्धिक, खेलकूद एवं क्रियात्मक व संगीत-नृत्य, अभिनय प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया। समापन पर विद्यालय के संस्थापक/संचालक एवं मन्त्री आर्य समाज फतेहनगर, श्री सुरेश मित्तल, प्रधानाचार्य कविता शर्मा, प्रधानाध्यापक श्री देवीलाल नायक, शिविर प्रभारी जीवनलाल आर्यवीर एवं स्थानीय आर्यजन उपस्थित थे। शिविर संचालन प्राध्यापक युगल किशोर शर्मा ने किया।

४. यज्ञ महोत्सव- प्रान्त ओड़िशा, बरगड़ जिला के गुरुकुल आश्रम शान्तिवन का पञ्चदश वार्षिक यज्ञ महोत्सव दिसम्बर दि. ३० व ३१ को किया गया। पूर्व की तरह इस वर्ष भी २५ से ३१ दिसम्बर २०१५ तक आर्यवीर दल शिविर का आयोजन तथा संचालन स्वामी नारदानन्द सरस्वती तथा डॉ. कुंजदेव जी के अध्यक्षता में किया गया। शिविर में छात्रों को उत्तम स्वास्थ्य तथा आत्मरक्षा के लिए योगासन, जुडो-कराटे, लाठीचालन, दण्ड बैठक का क्रियात्मक प्रशिक्षण गुरुकुल से आये व्यायाम शिक्षकों के द्वारा दिया गया। समाज में छात्रों को शक्तिशाली, चरित्रवान, अनुशासित तथा एक श्रेष्ठ नागरिक बनने के लिए स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, स्वामी व्रतानन्द सरस्वती, डॉ. कुंजदेव जी, पं. बिशिकेसन शास्त्री, आचार्य अशोक कुमार, आचार्य विनय वैदिक आदि विद्वानों ने उद्‌बोधन दिया। इस पवित्र कार्यक्रम में अनेक साधु-सन्त, वानप्रस्थी तथा गाँव के सज्जनों के सम्मुख सभी शिविरार्थी छात्रों को प्रशिक्षण प्रमाण-पत्र के साथ पुरस्कार प्रदान किये गये। अन्त में श्री सुभाष शास्त्री ने आश्रम में पधारे समस्त अतिथि, विद्वान् और कार्यकर्त्ताओं को धन्यवाद ज्ञापित किया।

५. वेद प्रचार- आर्यसमाज शास्त्रीनगर, मेरठ का वेद प्रचार समारोह दि. २७ से २९ नवम्बर २०१५ को धूमधाम के साथ मनाया गया। इस समारोह में डॉ. वेदपाल जी मुख्य अतिथि तथा आचार्य शिवकुमार शास्त्री सहारनपुर मुख्य वक्ता थे। डॉ. वेदपाल जी ने धन्यवाद ज्ञापित करते समय बताया कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ईशोपनिषद् को ही वेद कोटि के ग्रन्थ के रूप में स्वीकार करते थे। शेष उपनिषदें वेदानुकूल भाव के कारण आर्ष ग्रन्थों की कोटि में मानते थे। अन्य ग्रन्थों की प्रामाणिकता केवल वेदानुकूल अंश को ही आर्ष ग्रन्थ की कोटि में स्वीकार करते हैं। आचार्य शिवकुमार शास्त्री ने अपने तीन दिन के पाँच सत्रों में ईश्वर, जीव और प्रकृति के त्रैतवाद के सिद्धान्त तथा ईश्वर भक्ति के लिए पाँच बातें बताई- १. उपासना २. वेद स्वाध्याय ३. सत्संग ४. सेवा और ५. ईश्वर समर्पण। इनको व्यवहार में लाने से मनुष्य पाप कर्मों से बच जाता है और

मोक्षानन्द की प्राप्ति में सफलता प्राप्त करता है। इस प्रकार से रविवार को समारोह के समापन पर सहभोज की व्यवस्था भी समाज द्वारा अच्छी प्रकार से की गई थी।

६. **वार्षिकोत्सव सम्पन्न**- आर्यसमाज सैक्टर-६, भिलाई नगर, जि. दुर्ग, छ.ग. का त्रि दिवसीय ५६वाँ वार्षिकोत्सव १८ से २० दिसम्बर २०१५ को सम्पन्न हुआ, इसके साथ ही ऋग्वेद महायज्ञ का आयोजन भी किया गया। कार्यक्रम में १६ गुरुकुलों-आश्रमों के संचालक स्वामी धर्मानन्द सरस्वती-छ.ग., आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य अंशुदेव, यज्ञ के ब्रह्मा दिल्ली से पधारे आचार्य विद्यादेव एवं देहरादून से भजनोपदेशक पं. सत्यपाल सरल प्रमुख थे।

शोक समाचार

७. **वैदिक रीति से संस्कार**- आर्य समाज निम्बी जोधा (नागौर) के प्रधान चौधरी श्री नानूराम ढाका, ग्रा. लूकास के पिता **श्री डाबाराम ढाका** का स्वर्गवास दि. १४ दिसम्बर २०१५ को हुआ। दाह संस्कार १५ दिसम्बर को पूर्ण वैदिक रीति से वेदी बनाकर ५० किलो ग्राम हवन सामग्री व २० किलो ग्राम घी से नागौर जिला सभा प्रधान किशनाराम आर्य-बीलू, श्री रामचन्द्र आर्य जिला सभा उपप्रधान, श्री ओमदास आर्य-संयुक्त मन्त्री जिला सभा नागौर व श्री ओमप्रकाश राघव भजनोपदेशक द्वारा सम्पन्न करवाया। १६ दिसम्बर को इनके घर पर हवन करवा कर इनकी अस्थियाँ इनके खेत पर विसर्जित की गई। यह नागौर जिले में प्रथम कार्य था।

८. आर्यसमाज शिवाजी चौक, खण्डवा, म.प्र. के प्रधान श्री कृष्णलाल आर्य की धर्मपत्नी **श्रीमती गोपीदेवी आर्य** (विद्वानी) का दि. २१ नवम्बर २०१५ को आकस्मिक निधन हो गया। आपने आर्यसमाज की सेवा में प्रशंसनीय भूमिका निभाई।

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उन पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले २५ रु. **बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया, राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावर हाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं वैसे ही जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४

वैदिक पुस्तकालय का नया प्रकाशन - ''महर्षि दयानन्द सरस्वती का पत्र व्यवहार''

ऋषि मेले की झलकियाँ

विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति

आर जे/ए जे/80/2015-2017 तक   प्रेषण : १५ जनवरी , २०१६   ३९५९/५९

विद्वानों और कार्यकर्त्ताओं का सम्मान

ऋषि मेले की झलकियाँ

प्रेषक:
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर
(राजस्थान) - ३०५००१

सेवा में,